# चारित्र शुद्धि व्रत

सम्पादक

ब्र० धर्मचन्द शास्त्री

प्रकाशन सहयोगी

जैन महिला समाज

कृष्णा नगर, दिल्ली-110051

*चारित्र शुद्धि व्रतो के उपलक्ष्य में भेंट*

*मूल्य · व्रत उपवास*

# सम्पादकीय

अनादि काल से परिभ्रमण करने वाले संसारी प्राणियों की शान्ति का एक मात्र उपाय समीचीन धर्माचरण यह धर्माचरण अनेक प्रकार से किया जा सकता है किन्तु इसमें तप की महत्ता सर्वोपरि है, जैसे मक्खन में से घी निकालने के लिए बर्तन गरम करना आवश्यक है उसी प्रकार पापों से आत्मा को पृथक् करने के लिए शरीर को तपाना आवश्यक है। पूज्यपाद स्वामी ने स्वार्थ सिद्धि में लिखा है कर्मक्षयार्थं तप्यत इति तपः अर्थात् कर्म क्षय के लिए जो तपा जाता है उसे तप कहते हैं। तप इस प्रकार के आचार्यों ने बताये जिस प्रकार समुचित अग्नि का ताप स्वर्ण को सुसंस्कृत करती है उसी प्रकार बाह्याभ्यतर तप की ताप आत्मगुणों को सुसंकृत करती है।

यह व्रत मुनि, आर्यिका, श्रावक, श्राविका दोनों ही अपनी आत्म शुद्धि के लिए पालन करते हैं और उपवास के दिन एक–एक मन्त्र का जाप करते हैं। उद्यापन के समय गृहस्थ बड़े ही उत्साह से मण्डल मांडकर इसकी धर्म प्रभावना के साथ पूजन करते हैं। आत्म विशुद्धि को बढ़ाने वाला यह विधान बड़ा ही उपयोगी है।

चारित शुद्धि व्रत तेरह प्रकार के चारित्र के १२३४ अंग हैं, अतः १२३४ उपवास करना चाहिए। एक उपवास और एक पारणा के क्रम से करें तो यह व्रत ६ वर्ष १० माह और ८ दिन में पूरा होता है। श्रावक अथवा श्राविकाएं उपवास के दिन जिनेन्द्र भगवान का अभिषेक करके पूजा करें तथा मंत्र की जाप त्रिकाल करें।

**मंत्र :- ॐ ह्रीं असिआउसा चारित्रशुद्धि व्रतेभ्योनमः।**

व्रत के दिनों में अभिषेक, पूजन आरती स्त्रोत पाठ, स्वाध्याय जाप्य व आत्मचिन्तन अवश्य करना चाहिए। ब्रह्मचर्य व्रत का पालन तथा यथाशक्य

आरम्भ–परिग्रह का त्याग, भोगोप भोग की वस्तुओं का प्रमाण एवं रात्रि जागरण करना चाहिए। आत्म परिणामों को निर्मल एवं विशुद्ध रखने का प्रयास मुख्यता आवश्यक है। कषाय एवं रागद्वेष का त्याग करना चाहिए।

परम पू. क्षु० राजमति माताजी ने १२३४ उपवासों के उपलक्ष्य में यह व्रतों की पुस्तक का प्रकाशन कर व्रतों की परम्परा को बनाये रखी है।

ज्ञान दान को एक महान दान माना है जो कि ज्ञानावरण कर्म के क्षयोपशम के कारण है।

आशा है कि श्रावक एवं श्राविकाएं मुनि एवं आर्यिकाएं अपने जीवन को उन्नत बनाने में साधक व्रतों, उपवासों के माध्यम से अपनी आत्मा का उत्थान करें। आत्मा की उन्नति शील बनाने के लिए तपस्या ही अनवार्य है। तप के द्वारा हम परमात्मा पद प्राप्त कर सकते हैं।

चलते–फिरते तपस्वियों का शत्–शत् वन्दन अभिवन्दन।

**ब्र. पं. धर्मचन्द शास्त्री**

प्रतिष्ठाचार्य

## *नोट :-*

यह व्रत भाद्रपद की सुदी पडवा से आरम्भ किये जाते हैं। यह व्रत श्रावक–श्राविका अपनी शक्ति के अनुसार कर सकते हैं। उत्तम विधि तो उपवास करना है, मध्यम विधि में एक बार पानी ले सकते हैं तथा जघन्य में एक या दो रसों से एक बार भोजन (शुद्ध मयोदित) ले सकते हैं।

जो श्रावक–श्राविका बड़ी जाप नहीं कर सकते तो वे छोटी जाप भी कर सकते हैं।

**मंत्र :- ॐ ह्रीं असिआउसा चारित्रशुद्धि व्रतेभ्योनमः।**

श्री जिनेन्द्राय नमः

# समुच्चय पूजन
# चारित्र शुद्धि व्रत की पूजा

शुद्ध सुगुण छ्यालिस युत, समोशरण के ईश।
निज आतम उद्धार हित, नमत चरण मे शीश।। १।।

आत्म–शुद्धि के अर्थ हम, जिनवर पूज रचायं।
रत्नत्रय की प्राप्ति हित, श्री जिनेन्द्र गुण गायं।।२।।

करूं त्रिविधि शुधियोग से, आह्वनंन् विधि सार।
आवहु तिष्ठहु हृदय में, नाथ त्रिलोक आधार।।३।।

## -सोरठा-

व्रत चरित्र महान, इस बिन मुक्ति न पावहीं।
चारित्र शुद्धि विधान, इसीलिए अर्चन करूं।।

ॐ ह्रीं अष्टदश दोष रहित षट् चत्वारिंशद् गुण सहित अर्हन्त् परमेष्ठिन् अत्र अवतर अवतर संवौषट्।

ॐ ह्रीं अष्टदश दोष रहित षट् चत्वारिंशद् गुण सहित अर्हन्त् परमेष्ठिन् अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ ठः ठः।

ॐ ह्रीं अष्टदश दोष रहित षट् चत्वारिंशद् गुण सहित अर्हन्त् परमेष्ठिन् अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं परिपुष्पांजलि क्षिपत्।।

## (अष्टक)

गंगादिक निर्मल नीर, कंचन कलश भरूं।
प्रभु वेग हरो भव पीर, चरणन धार करूं।।

बारह सौ चौंतिससार, प्रोषध सुख कारी।
मैं पूजों विविध प्रकार, आतम हितकारी।।

ॐ ह्रीं अष्टदश दोष रहित षट् चत्वारिंशद् गुण सहिताय बारह सौ चौंतीस शुद्ध चारित्र व्रत मंडिताय अर्हन्त परमेष्ठिने जल निर्वपामिति स्वाहा।

मलयागिरि चन्दन सार, केशर रंग भरी।
प्रभु भव आताप निवार, यह विनती हमरी।।
बारह सौ चौंतिससार, प्रोषध सुख कारी।
मैं पूजों विविध प्रकार, आतम हितकारी।।

ॐ ह्रीं अष्टदश दोष रहित षट् चत्वारिंशद् गुण सहिताय बारह सौ चौंतीस शुद्ध चारित्र व्रत मंडिताय अर्हन्त परमेष्ठिने चन्दनं निर्वपामिति स्वाहा।

ले चन्द्र किरण समशुद्ध, अक्षत शुचि सारे।
तसु पुंज धरूं अवरुद्ध, तुम पग तल धारे।।
बारह सौ चौंतिससार, प्रोषध सुख कारी।
मैं पूजों विविध प्रकार, आतम हितकारी।।

ॐ ह्रीं अष्टदश दोष रहित षट् चत्वारिंशद् गुण सहिताय बारह सौ चौंतीस शुद्ध चारित्र व्रत मंडिताय अर्हन्त परमेष्ठिने अक्षतम् निर्वपामिति स्वाहा।

सुरततरु के सुमन समेत, अलि गुंजार करें।
मैं जजूं चरण, निज हेतु, मद गद व्याध हरे।।
बारह सौ चौंतिससार, प्रोषध सुख कारी।
मैं पूजों विविध प्रकार, आतम हितकारी।।

ॐ ह्रीं अष्टदश दोष रहित षट् चत्वारिंशद् गुण सहिताय बारह सौ

चौंतीस शुद्ध चारित्र व्रत मंडिताय अर्हन्त परमेष्ठिने पुष्पम् निर्वपामिति स्वाहा।

नानाविधि के पकवान, कंचन थाल भरूं।
मैं जंजू चरण ढिग आन, भूख व्यथा जुहरूं।।
बारह सौ चौंतिससार, प्रोषध सुख कारी।
मैं पूजों विविध प्रकार, आतम हितकारी।।

ॐ ह्रीं अष्टदश दोष रहित षट् चत्वारिंशद् गुण सहिताय बारह सौ चौंतीस शुद्ध चारित्र व्रत मंडिताय अर्हन्त परमेष्ठिने नैवेद्यं निर्वपामिति स्वाहा।

तम खण्डन दीप अनूप, तुम पद निकट धरूं।
मम मोह हरो शिव भूप, याते पूज करूं।।
बारह सौ चौंतिससार, प्रोषध सुख कारी।
मैं पूजों विविध प्रकार, आतम हितकारी।।

ॐ ह्रीं अष्टदश दोष रहित षट् चत्वारिंशद् गुण सहिताय बारह सौ चौंतीस शुद्ध चारित्र व्रत मंडिताय अर्हन्त परमेष्ठिने दीपम् निर्वपामिति स्वाहा।

दसविधि की धूप बनाय, पावक में खेऊं।
मम दुष्ट करम जल जाय, तुम पद नित खेऊं।।
बारह सौ चौंतिससार, प्रोषध सुख कारी।
मैं पूजों विविध प्रकार, आतम हितकारी।।

ॐ ह्रीं अष्टदश दोष रहित षट् चत्वारिंशद् गुण सहिताय बारह सौ चौंतीस शुद्ध चारित्र व्रत मंडिताय अर्हन्त परमेष्ठिने धूपम् निर्वपामिति स्वाहा।

बादाम सुपारी लाय, केला फल प्यारे।
तुम शिव फल देहु दयाल तुम पद फल धारे।।

बारह सौ चौंतिससार, प्रोषध सुख कारी।
मैं पूजों विविध प्रकार, आतम हितकारी।।

ॐ ह्रीं अष्टदश दोष रहित षट् चत्वारिंशद् गुण सहिताय बारह सौ चौंतीस शुद्ध चारित्र व्रत मंडिताय अर्हन्त परमेष्ठिने फलम् निर्वपामिति स्वाहा।

जल फल वसु कंचन थाल, आठौ द्रव्य धरूं।
"छोटे" नित नावत भाल तुम पद अर्घ धरूं।।
बारह सौ चौंतिससार, प्रोषध सुख कारी।
मैं पूजों विविध प्रकार, आतम हितकारी।।

ॐ ह्रीं अष्टदश दोष रहित षट् चत्वारिंशद् गुण सहिताय बारह सौ चौंतीस शुद्ध चारित्र व्रत मंडिताय अर्हन्त परमेष्ठिने अर्घं निर्वपामिति स्वाहा।

## -चाल योगीरासा-

मंगल अर्घ बनाय गाय गुण, कंचन थाली भरिये।
अर्घ देत जिनराज–चरण में, महा हर्ष उर धरिये।।
चारित शुद्धि व्रत के हित मैं, जिन पद पूज रचाऊं।
आतम हित के हेतु जिनेश्वर, पद में शीश नवाऊं।।

ॐ ह्रीं अष्टादश दोष रहिताय षट्चत्वारिंशद् गुण सहिताय बारह सौ चौंतीस शुद्ध चारित्र गुण मंडिताय श्री अर्हंत परमेष्ठिने महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

## जयमाला

-दोहा-

जिसकी शुद्धि के बिना, जिनवर सीझे नाहिं।
उसकी शुद्धि के लिए, जिनवर पूज रचाहिं।।१।।

व्रत चारित को शुद्ध कर, पहुंचे अविचल थान।
उनही के पद कमल का, धरूं हृदय में ध्यान।।२।।

## * पद्धडी-छन्द*

जय जग जय जिनवर देव भूप, जय जय जग शिव वल्लभ अनूप।
जय जगत पति जय जगन्नाथ, जय मंगलमय हम नमत माथ।।३।।
जय शिवशंकर जय विष्णु देव, जय ब्रह्मा जय मंगल विशेष।
जय कमलासन कृत कर्म ईश, इन्द्रादि चरण नित नमत शीश।।४।।
अष्टा दश दोष विमुक्त धीर, जय मंगल भव हरत पीर।
जय अन्तरिक्ष राजत जिनेश, जय चतुर्गती काटत कलेश।।५।।
जय इन्द्रियजय, जय धर्म वीर [illegible]
जय जगत शिरोमणि गुण निधान, जय शत्रु मित्र जानत समान।।६।।
जय व्रत चारित धारी करण्ड, जय शुद्ध विहारी आत्म पिण्ड।
जय सत् चित् घन आनन्द रूप, जय शुद्ध चिदानन्द सत् स्वरूप।।७।।
जय पंच महाव्रत धरन धीर, जय पंच समिति पालक सुवीर।
जय तीन गुप्ति के रथ सवार, यह तेरह विधि चारित्र धार।।८।।
जय चरित शुद्ध धर व्रत दयाल, इक क्षण में तोड़े कर्म जाल।
ऐसे विशुद्ध वर व्रत प्रधान, ऐसे व्रत को पूजत सुजान।।९।।
यह व्रत है सब जग में प्रसिद्ध, है नित्य अनादि स्वयं सिद्ध।
इसके बिन मुक्ति नहीं होय, यह व्रत है कारण सिद्ध होय।।१०।।
हे व्रताधीश हे व्रत दिनेश, हे शिव वल्लभ काटो कलेश।
अब तेरा शरण गहा सुजान, "छोटे" चाहत निज आत्म ज्ञान।।११।।

## * सोरठा *

व्रत चारित्र प्रमाण चारित्र पालें वीर वर।
ते पावें निर्वाण आगे कर्म नशाय के।।

ॐ ह्रीं अष्टादश रहिताय षट् चत्वारिंशत गुण सहिताय बारह सौ चौंतीस चारित्र गुण मंडिताय श्री अर्हन्त परमेष्ठिने पूर्णार्घं निर्वपामिति स्वाहा।

जो विशुद्ध मन से सदा चारित पाले वीर।
ते वसु कर्म नशाय के पहुंचे भव के तीर।।

**''इत्याशीर्वाद''**

पुष्पाञ्जलि क्षिपेत्।

# आद्य व्यक्तव्य

जैनों में चारित्र धारण करने का अत्यधिक महत्व है। दर्शन ज्ञान की आवश्यकता होने पर भी वे अपने आप में तब तक पूज्य नहीं माने जाते जब तक व्रत रूप चारित्र का उनके साथ सहयोग न हो। जहां तक संसारोच्छेद का प्रश्न है वह तो चारित्र के बिना हो ही नहीं सकता। इसीलिए भगवान समन्तभद्र ने रत्नकरण्ड श्रावकचार में लिखा है।

मोहतिमिरापहरणे दर्शनलाभादवाप्तसंज्ञानः।
रागद्वेषनिवृत्यै चरण प्रतिपद्यते साधुः।।

अर्थात– दर्शन मोह का अभाव हो जाने पर सम्यग्दर्शन होता है, और सम्यग्दर्शन के लाभ से सम्यग्ज्ञान प्राप्त होता है। इसके बाद रागद्वेष की निवृत्ति के लिए साधु चारित्र धारण करता है।

इस कथन से स्पष्ट है कि दर्शन ज्ञान हो जाने पर भी रागद्वेष तब तक दूर नहीं होते जब तक चारित्र धारण न किया जाय।

इस आत्मा का मुख्य ध्येय रागादि से निवृत्ति प्राप्त करना है। यह रागादि की पूर्ण निवृत्ति ही मुक्ति है जो चारित्राश्रित है अतः मुमुक्षु को चारित्र धारण करना उतना ही आवश्यक है। जितना जीवन के इच्छुक को आहार करना।

इस घोर कलिकाल में इस चारित्र की ही उपेक्षा की जा रही है और इस कलिकाल की भीषणता तब और बढ़ जाती है जब चारित्र को संसार पतन का कारण बताया जाता है।

जब लोग चारित्र मे स्वतः उपेक्षित हैं और सब प्रकार की भक्ष्याभक्ष्य प्रवृत्ति से परहेज नहीं करना चाहते तब व्रतादि रूप चारित्र को अधर्म कहना, संसार का कारण बतलाना 'अन्ध असूझन की अखियन में झोंकत

हैं रज रामदुहाई' का स्मरण कराता है।

आवश्यकता इस बात की है कि अन्धों की आख में धूल झोंकने वाले इन कलि–प्रचारकों से जन साधारण को जागृत किया जाय, और उसका एक ही उपाय है कि जनता को इस प्रकार का साहित्य दिया जाय जिससे वह मार्गदर्शन कर सके।

इसमें १२३४ उपवासों की व्यवस्था है। इन उपवासों को किस विधि से करना चाहिए और ये कितने समय में पूर्ण होने चाहिए इत्यादि सम्पूर्ण विधि–विधान का इसमें दिग्दर्शन है। इस विधान को करने से जिन पौराणिक महापुरूषों ने फल प्राप्त किया है उसकी सुन्दर कथा भी दी है। सभी उपवास तेरह प्रकार के चारित्र से संबंधित हैं। ये तेरह प्रकार के ५ महाव्रत, ५ समिति और ३ गुप्ति हैं। इनमें से किस चारित्र से संबंधित कितने उपवास हैं उनकी गणना दी है। इस विधान का स्रोत हरिवंश पुराण का ३४ वां सर्ग है। विधान के अन्त में लिखा है।

त्रयोदशविधस्यैव चारित्रस्य विशुद्धये!
विधौ चारित्रशुद्धो स्युरुपवासा प्रकीर्तिता।। १०६।।

तेरह प्रकार के चारित्र की शुद्धि के लिए इस चारित्र शुद्धि विधान में उक्त उपवासों का कथन किया।

इस तरह इन उपवासों का फल तेरह प्रकार की चारित्र शुद्धि है। शुद्ध चारित्र का पालन करते हुए तीर्थंकर प्रकृति का बन्ध होना स्वाभाविक ही है। यही कारण है कि कथा के प्रारंभ में सम्राट श्रेणिक द्वारा तीर्थंकर प्रकृति बंध के कारणों को गौतम गणधर से पूछा गया है।

पुस्तक समयोपयोगी है और चारित्र पालन के लिए विशुद्ध प्रेरणा देती है।

# अथ चारित्र शुद्धि व्रत
# (बारह से चौतीस)

## व्रत कथा

### रचियता- श्री जिनेन्द्र भूषणजी भट्टारक।

बंदौं श्री अरहंत कौ, ढ कर शीस नमाय।।
बारह सै चौतीस व्रत, करौ भव्य मन लाय।।१।।
जम्बूद्वीप दीपन में सार, भरत क्षेत्र तहाँ कहौ अपार।
मगध देश देशन में बनी, राजगृह नगरी तहा बनो।।२।।
राजा श्रेणिक राज करंत, पटारानी चेलना महत।
एक समय विपुलाचल धीर, वर्द्धमान आयो गंभीर।।३।।
छह ऋतु के फल देखौ राई, वनमाली ने भाषी आई।
वंदन गये राइ गुनमान, वीरनाथ स्वामी भगवान।।४।।
नर कोठा नृप बैठन लग्यौ, मानो भव अंजुलि उन दयौ।।
तब नृप बोले मस्तक नाय, मो सौ बात कहौ समझाय।।५।।
सोलह कारण व्रत बिन करो, तीर्थकर पद क्यौं करि धरौं।
तब बोले गौतम विहसाय, सुनि नृप कहौ महागुणगाई।।६।।
बारह से चौतीसा नाम, ता व्रत करि तीर्थंकर पद पाई।
ता व्रत करै महाफल होई, तो सौ भाषत हौं अब सोई।।७।।
किन व्रत करो कौन फल आय, कैसी विधि सौं व्रत कराय।
मैं सौ सब भाषौ मगधेश, तौं सौं कहौं धरम को वेस।।८।।
जम्बूद्वीप सुदर्शन मेरु, लवणोदधि फेरौ चहुँ ओर।
तामैं देश अवंति वसै, उज्जैनी नगरी सख लैस।।९।।

राजा हेमवरण परवीन, रानी शिवसुंदरी गुन धीर।
एक समय नृप वन कौ जाय, चारण मुनि देखे सुखपाय।।१०।।
गुनजय वरजय नाम जतीश, राति दिवस ध्यायै जगदीश।
नमस्कार नृप नै तब करौ, समता भाव चित्त में धरौ।।११।।
हे गुरु मो पर कृपा करेउ, व्रत जु एक मोकूं तुम देउ।
जासौं पद तीर्थंकर पाय, अंतकाल सो शिवपुर जाई।।१२।।
तब भाषौ गुरु कृपा निधान, भादव मास तैं करौ विधान।
सहिलौ व्रत पड़वा तै लीजै, बारह सै चौतीस करीजे।।१३।।
जब व्रत पूरन होई महान उद्यापन विधि सुनौ सुजान।
झारी थाली कलशा लेउ, सो जिनके चैत्यालय देउ।।१४।।
करो रकेवी चौसठ सार, मूढा जाय एक दे धार।
लाडू बारह सौ चौतीस, दीजौ श्रावक कौ गुन धीस।।१५।।
दूध धीउ दधिरा देउ, तातै जनम सफल करि लेउ।
दश वरषै जु मास धरितीन, ता पर आधो पक्ष सुलीन।।१६।।
अथवा एकान्तर जो करैं, पांच वरस में निश्चय भरै।
पौने दो मास अधिकाय, ऐसो व्रत करियै गुन ज्ञान।।१७।।
जह व्रत सुनि गुरु के मुख सोई, नृप परम आनंदो लेइ।
लीनौ व्रत रानी अरु राय, तामै भाव भये अधिकाय।।१८।।
राजा नै व्रत पूरै करौ, उद्यापन विधि पूरव धरौ।
अंत अवस्था धरि संन्यास, अच्युतेन्द्र पद पायौ जासु।। १९।।
बाईस सागर आयु जु धरी, तहां के सुख भुगतै गुनभरी।
अंत देव सौ भयौ निदान, क्षेत्र विदेह महा सुखदान।।२०।।
नगरी विजिया पुरी है एक, जैन धरम की जातै टेक।
राजा तहां धनुजय लहौ, रानी सौमश्री सुख रहौ।।२१।।

ताकै देय लियौ अवतार, तीर्थंकर पद पायो सार।
चंद्रभानप्रभ तिन कौ नाम पंच कल्याणक है गुणठाम।।२२।।
केवलि लहि प्रभु मुक्तिहि गयो, सिद्धसु जुक्ति निरंजनभयो।
एसौ यह व्रत जानो भव्य, पावै शिवपुर गच्छ।।२३।।
राजा श्रेणिक ने व्रतलियो, भाव सहित संपूरण कियौ।
शिवसुन्दरी रानी व्रतलियौ, सोलह स्वर्ग देवता भयौ।।२४।।
नरनारी जो व्रत कौ करै, ते तीर्थंकर पदवी धरै।
जह व्रत करो भविक मनलाय, सो शिवपुर पदवीको पाई।।२५।।
कथा कोश में बहु भाषी आई, तामैं ते यह कथा बनाई।
जैसी विधि गुरुनै कही, तैसी कथा कोश में लही।।२६।।
संवत अठारह सै बाईस, ता पै रचौ महा गुणईश।
सहारनपुर गुनह निधान, सब श्रावक जे सुनै पुरान।।२७।।
मूलसंघ सरस्वती गच्छ, ऐसौ निश्चय जानो वच्छ।
पद गुआलि अरु मुनि २ भयौ, भट्टारक पद तिनकौठयो।।२८।।
विश्वभूषण पद जजु महान, जिनेन्द्रभूषण यह रचौ महान।
भूले अक्षर लेहु संभार, गुणी पुरुष तुमको यह भार।।२९।।

# श्री चारित्र शुद्धि (बारह सौ चौतीस) व्रत कथा

जम्बूद्वीप के भरतक्षेत्र में मगध नाम का एक सुन्दर देश है। तदन्तर्गत राजगृही नाम की एक सुन्दर नगरी है। उस नगरी का राजा श्रेणिक अपनी पट्टरानी चेलना सहित सुख पूर्वक राज्य करता था। एक दिन विपुलाचल पर्वत पर श्री १०८ महावीर स्वामी का समवसरण आया। भगवान के शुभागमन से छहों ऋतुओं के फल-फूल एक साथ खिल गये। माली इसे देखकर अत्यंत हर्षित हुआ और उन फलफूलों को लेकर राजा की सेवा में उपस्थित हुआ। राजा ने इस आश्चर्य को देखकर अत्यन्त प्रसन्नता प्रकट की और वनमाली को अपने गले का हार देकर विदा किया।

राजा समझ गया था कि वह भगवान महावीर का अतिशय है, विपुलाचल पर्वत पर भगवान के दर्शनार्थ चलना चाहिए। अतः वह सम्पूर्ण नगर की प्रजा को साथ लेकर अपने परिवार सहित प्रभु की वंदना के हेतु विपुलाचल पर्वत पर गया और समवसरण में पहुंचकर भगवान के दर्शन एवं वंदना कर मनुष्यों के कोठे में जा बैठा।

अथानन्तर मोक्ष का अभिलाषी राजा श्रेणिक मस्तक नवा कर प्रार्थना करने लगा कि हे प्रभो ! मुझे समझाइये कि षोडश कारण व्रत करने सिवाय तीर्थंकर पद प्राप्त करने का अन्य साधन भी है या नहीं। इस प्रश्न का उत्तर गणधर देव ने किया "हे राजन् ! बारह सौ चौंतीस व्रत करने से उत्तम तीर्थंकर पद की प्राप्ति होती है। यह व्रत किसने किस प्रकार किये और उसका क्या फल मिला यह सब मैं सविस्तार कहता हूं, तुम एक चित्त होकर सुनो।

हे मगधाधीश ! इस जम्बूद्वीप में अवंती नाम का सुन्दर देश है। इसमें धनधान्य से परिपूर्ण उज्जयनी नाम की सुन्दर नगरी है। इसमें हेमवर्ण नाम

का गुणवान राजा राज्य करता था। उसकी रानी का नाम शिवसुन्दरी था। एक दिन राजा वनक्रीडा करने के हेतु वन में गया। उसे मार्ग में गुणंजय और वरंजय नाम के दो चारण ऋद्धि धारी मुनिश्वर दृष्टिगोचर हुए। वे दिन–रात आत्म–चिन्तन में रहने वाले तथा भव्यजीवों का उद्धार करने वाले थे। राजा ने मुनि युगल को देखकर भक्ति सहित प्रणाम किया और विनम्र भाव से प्रश्न किया – हे भगवन् ! मुझे कृपा करके ऐसा व्रत दीजिये जिसके प्रसाद से मैं तीर्थंकर पद प्राप्त कर मुक्ति प्राप्त कर सकूं। यह सुनकर करुणासागर मुनिराज बोले, हे मुमुक्षु ! चारित्र शुद्धि (बारहसो चौंतीस) व्रत करने से तीर्थंकर पद की प्राप्ति होती है जिससे मुक्ति को प्राप्त करना नियम से है ही। यह व्रत भाद्रपद मास की शुक्ला प्रतिपदा से प्रारंभ किया जाता है। एक महीने में दस उपवास किये जावे तो इस प्रकार दस वर्ष ३।। माह में कुल १२३४ उपवास पूर्ण होते हैं और यदि इन उपवासों को एकांतरे से किया जावे तो ६ वर्ष १० महीने और ८ दिन में पूर्ण होते हैं। कदाचित् ऐसी शक्ति न हो तो यह उपवास बीच–बीच में किये जा सकते हैं और पचीस वर्ष में भी समाप्त कर सकते हैं किन्तु उपवासों की संख्या १२३४ हो जानी चाहिए।

सब ही व्रतों की शोभा उद्यापन से होती है अतः इसके उद्यापन को भी इस प्रकार करना चाहिए :–

जिन मन्दिर में झारी, थाली, कलश इत्यादि उपकरण चढ़ावें और ६४ रकाबियां साधर्मियों को बांटे तथा १२३४ लड्डू भी श्रावकों को बांटे, भगवान जिनेन्द्र का भक्ति भाव से पंचामृताभिषेक पूर्वक चारित्र शुद्धि मण्डल विधान की पूजा करे एवं दानादि दे कर अपना जन्म सफल करें।

इस प्रकार गुरुओं के श्रीमुख से व्रत का विधान सुनकर दोनों दम्पत्ति अत्यन्त प्रसन्न हुए और दोनों ने ही श्री गुरु के पादमूल से व्रत ग्रहण किये। व्रतों को विधि से पूर्ण कर उद्यापन किया और अन्त समय सन्यास पूर्वक समाधिमरण कर राजा अच्युत स्वर्ग में इंद्र और रानी उसकी इन्द्राणी हुई। वहां सोलहवें स्वर्ग में बाईस सागर की उत्कृष्ट आयु का उपभोग कर विदेह

क्षेत्र में विजयापुरी नाम की सुन्दर नगरी के धर्म बुद्धि राजा धनंजय के सोम श्री नाम की राणी के गर्भ में अवतरित हुए और श्री चन्द्रभानु नाम के तीर्थंकर हुए। इस प्रकार हेमवर्ण राजा के जीव ने १२३४ व्रतों को धारण कर तीर्थंकर पद प्राप्त किया और पांचों कल्याण को प्राप्त होकर नित्य निरंजन पद अर्थात् सिद्ध पद प्राप्त किया।

व्रत के महान महात्म्य को समझ कर जो भव्य जीव १२३४ व्रत को विधिपूर्वक पालेंगे और अन्त समय में समाधिमरण पूर्वक पर्याय त्यागेंगे वे निश्चय से शाश्वत सुख स्वरूप तीर्थंकर पद प्राप्त कर मुक्ति रूपी लक्ष्मी को वरेंगे।

इस प्रकार श्री गौतम गणधर से बारह सौ चौंतीस व्रतों की विधि को श्रद्धापूर्वक सुनकर राजा श्रेणिक ने अंगीकार की।

यह कथा जैसी कथाकोशों में गुरु परम्परा से चलती आ रही है। वैसी ही यहां लिखी गई है। इस कथा का मूल कथानक विक्रम संवत् ११२२ में अनेकों श्रावक श्राविकाओं में सम्पन्न शास्त्र तथा पुराणों के परम श्रद्धालु, सदान्तर ग्राम में निवास करने वाले, मूलसंघ एवं सरस्वती गच्छान्तर्गत विश्वभूषण भट्टारक गुवाली मुनि के शिष्य जिनेन्द्र भूषण भट्टारक द्वारा रचा गया।

इस व्रत में प्रत्येक उपवास की जाप्य अलग–अलग है। यहाँ सर्व साधारण के लिए छोटा सा जाप्य मंत्र लिख दिया है। इस व्रत के धारक शुद्ध मन होकर १०८ बार जपें।

जाप्य मंत्र–

**मंत्र :- ॐ ह्रीं असिआउसा चारित्रशुद्धि व्रतेभ्योनमः।**

(इस व्रत की विधि जिनसेनाचार्य विरचित हरिवंश पुराण के ३४वें पर्व में निम्न प्रकार दी है।)

# विधि-चारित्रशुद्धि

चारित्र तेरह प्रकार का आचार्यों ने माना है।

पांच महाव्रत:— अहिंसा महाव्रत, सत्यमहाव्रत, अचौर्य महाव्रत, ब्रह्मचर्य महाव्रत, परिग्रहत्याग महाव्रत।

पांच समिति— ईर्या समिति, भाषा समिति, एषणा समिति, आदान निक्षेपण समिति और प्रतिष्ठापन समिति।

तीन गुप्ति— मनो गुप्ति, वचन गुप्ति और कायगुप्ति

इनमें सर्व प्रथम अहिंसा महाव्रत के उपचारों को आचार्य श्री कहते हैं—

चतुर्दशस्वहिंसार्थं जीव--स्थानेषु भाविताः।
त्रियोगनवकोटिघ्नैस्ते षड्विंशं शतंस्फुटम्।।१००।।

(१) एकेंद्रिय बादर (२) एकेन्द्रियसूक्ष्म (३) द्विइद्रिय (४) तीन इंद्रिय (५) चतुरिंद्रिय (६) पंचन्द्रिय असंज्ञी (७) और पंचेन्द्रिय संज्ञी इन सातों को पर्याप्त और अपर्याप्त से गुणा करने पर कुल १४ जीव समास के भेद होते हैं अर्थात् इन १४ स्थलों पे जीव पाये जाते हैं इनकी (१) अपने मन से हिंसा न करना (२) दूसरे से हिंसा न कराना और (३) करते हुए की अनुमोदना न करना।

(१) स्वयं अपने वचन से हिंसा नहीं करना और, (२) दूसरों के वचनों से हिंसा नहीं करना, (३) करते हुए अनुमोदना नहीं कराना, (१) स्वयं अपने शरीर से इनकी हिंसा नहीं करना। (२) दूसरे के शरीर से हिंसा नहीं कराना। (३) एवम करते हुए की शरीर से अनुमोदना नहीं करना। इस प्रकार १४ जीव स्थानों (जीव समास) का नव कोटि से त्याग करने पर १२६ भेद (१४ x ९=१२६)

रूप हिंसा टलती है इसलिए अहिंसा व्रत के १२६ भेद होते हैं इन व्रतों के १२६ उपवास और इतने ही पारणा होते है।

# सत्यव्रत के उपवास

भीर्ष्या–स्वपक्ष–पैशुन्य–क्रोध–लाभात्माशंसनैः।
द्वासप्ततिर्नवघ्नैस्ते पदनिंदानिवर्तैरिति।।१०१।।

असत्य भाषण ८ प्रकार से होता है जैसे– भय, ईर्ष्या, स्वपक्ष समर्थन, चुगलखोरी, क्रोध, लोभ, आत्मप्रशंसा और पर की निंदा। इन आठ प्रकार से होने वाली असत्य का नव कोटी त्याग अर्थात् मन, वचन, काय, कृतकारित और अनुमोदना से त्याग करना चाहिए इस कारण इसके ८ x ९= ७२ उपवास होते हैं और एक एक उपवास के बाद एक एक पारणा इस प्रकार ७२ उपवास और इतने ही पारण होते हैं।

# अचौर्यव्रत पालन के उपवास

ग्रामरण्यखलैकान्तैरन्यत्रोन्योपध्यभुक्तकैः।
सपृष्ट ग्रहणैः प्राग्वद् द्वासप्ततिरमी स्मृता।।१०२।।

चोरी आठ स्थानों से हो सकती है जैसे १ ग्राम, २ जंगल ३ खलिहान, ४. एकान्त, ५ अयन्त्र, ३ उपधि ७. अभुक्तक ८ और पृष्ट ग्रहण (पीछा करना) इन आठो को उक्त मन वचन काय, कृत कारित अनुमोदन इस प्रकार नव कोटि से त्याग करना चाहिए। इस प्रकार इस अभिप्राय को लेकर अचौर्य महाव्रत के (8X9= 72) ७२ उपवास होते हैं तथा पूर्वोक्त उपवास की एक–एक पारणा होने से ७२ ही पारणा होते हैं।

# ब्रह्मचर्य पालन के उपवास

नृदेव–चित्र–तिर्यक् स्त्रीरूपैः पंचेन्द्रियाहतैः।
नवघ्नैब्रह्मचर्यैः स्युः शतं तेऽशीतिमिश्रतम्।।१०३।।

ब्रह्मचर्य भंग चार प्रकार की स्त्रियों से होता है अर्थात् मनुष्य स्त्री, देवांगना, अचेतन स्त्री (पुतली या फोटो) और तिर्यंच स्त्री (गाय घोडी आदि।) इन चारों से पंचेन्द्रिय भोग भोगना कुशील है। इनके परिहार से ब्रह्मचर्य पालन होता है। अतः ४ x ५ =२० और इनका नव कोटि से त्याग करना २० x ९= १८० भेद रूप त्याग कहलाता है। इस हेतू ब्रह्मचर्य महाव्रत में १८० उपवास और इतने ही पारणा होते हैं।

# परिग्रहत्याग महाव्रत के उपवास

चतुः कषाया नव नोकषाया मिथ्यात्वमेते द्विचतुः पदे च
क्षेत्रं च धान्यं च हि कुप्यभाण्डे धनं च यानं शयनासनं च।। १०४।।
अंतर्बहिर्भेदपरिग्रहास्ते रंध्रैश्चतुर्विंशतिराहतास्तु।
ते द्वे शते षोडश संयुते स्यु. महाव्रते स्यादुपवासभेदाः ।। १०५।।

परिग्रह अतरंग और बहिरंग भेद से दो प्रकार का बतलाया गया है। उनमें अंतरंग परिग्रह चौदह प्रकार का है– चार क्रोधादिकषाय, हास्यादि नोकषाय और एक मिथ्यात्व इस प्रकार कुल १४ अतरंग परिग्रह हैं। बहिरंग परिग्रह के दस भेद होते हैं उनमें–द्विपद (दास दासी स्त्री इत्यादि) चतुष्पद (गाय घोडा बैल इत्यादि) खेत, धान्य, कुप्य (कपडे) भाण्ड (बरतन) धन (रुपया पैसा) यान (सवारी) शयन (पलंग आदि) आसन ये दस भेद और उक्त १४ भेद मिलकर २४ प्रकार का परिग्रह होता है इनका मन, वचन, काय, कृत, कारित और अनुमोदना रूप नव कोटि से करना चाहिए। इस अभिप्राय को लेकर परिग्रह महाव्रत के

२४ x ६= २१६ उपवास व इतने ही पारणा होते हैं।

इस प्रकार पाच महाव्रत के १२६+७२+७२+१८०+२१६=६६६ उपवास तथा ६६६ पारण होते हैं।

षष्ठम रात्रिभोजनत्याग व पंच समिति व तीन गुप्ति के उपवास

षष्ठे दशोपवासाः स्युरनिच्छा नव कोटिभिः।
प्रत्येकं नव विज्ञेया त्रिगुप्तिसमितित्रिके।।१०६।।

## पांच समिति के उपवास

समितियां पांच होती हैं–ईया भाषा, एषणा, आदान निक्षेपण और प्रतिष्ठापन व्युत्सर्ग इनमें ईर्ष्या समिति, आदान निक्षेपण और व्युत्सर्ग समिति इन तीनों के एक–एक भेद हैं अतः इनको नव कोटि पालन करने से 3X9= 27 भेद हैं होते अतः इनके पालनार्थ २७ उपवास व २७ पारणे होते हैं।

## भाषा समिति के उपवास

भावोपमा–व्यवहार–प्रतीत्य–संभावना–सुभाषायाम्।
जनपद संवृद्धि नाम स्थापना रूप दश नवध्ना।।१०७।।

भाषा समिति में भाव सत्य, उपमा सत्य, व्यवहार सत्य, प्रतीत्यसत्य, संभावना सत्य और रूप सत्य, इस प्रकार दश भेद रूप असत्य को नव कोटि से त्यागना १० x६= ६० नव्वे भेद रूप। इनके ६० ही उपवास और इतने ही पारणे होते हैं।

## एषणा समिति के उपवास

षट् चत्वारिंशतो दोष नेषणासमितौ मलान्।
नवध्नान् विधिघ्नं कार्यास्तावन्त उपवासकाः।।१०८।।

एषणा समिति में उद्गमादि ४६ दोषों को मन, वचन, काय, कृत, कारित और अनुमोदना इन नव कोटियों से त्याग करना कहा है। ४६ दोष– १ धात्री दोष २ दूत दोष ३ निमित्त दोष ४ आजीवन दोष, ५ वनीषक दोष ६ चिकित्सा दोष ७ क्रोधदोष ८ मान दोष, ९ माया दोष १० लोभ दोष ११ पूर्व स्तुति दोष १२ पश्चात् स्तुति दोष १३ विद्या दोष १४ मंत्र दोष १५ चित्रयोगदोष १६ मूलक्रम दोष १७ शंकित दोष १८ मुक्षित दोष १९ निक्षिप्त दोष २० पिहित दोष २१ व्यवहरण दोष २२ दायक दोष २३ उन्मिश्रदोष २४ अपरिणत दोष २५ लिप्त दोष २६ छोटित दोष २७ औद्देशिक दोष २८ साधित दोष २९ पति दोष ३० प्राभृतक दोष ३१ मिश्रदोष ३२ बलिदोष ३३ न्यस्तदोष ३४ प्रादुष्कृत दोष ३५ क्रीत दोष ३६ प्रामित्य दोष ३७ परिवर्तितदोष ३८ निषिद्धदोष ३९ अभिहृत दोष ४० उदिभन्न दोष ४१ उच्छेद्य दोष ४२ माला दोष ४३ अंगार दोष ४४ धूम्र दोष ४५ संयोजना ४६ प्रमाणातिक्रम दोष, इनको नव कोटि से त्याग करने पर ४६ x ९=४१४ भेद रूप ४१४ उपवास तथा इतने ही पारण होते हैं।

# तीन गुप्ति पालनार्थ उपवास

गुप्ति तीन के भेद होते है– मनोगुप्ति, वचन गुप्ति, काय गुप्ति इन तीन गुप्तियों को उक्त नव कोटि से पालना चाहिए। इसके हेतु ३ x९=२७ उपवास और इतने ही परणा होते हैं।

उक्त त्रयोदश चारित्र का पूर्णतया पालन रात्रि मुक्ति त्याग से होता है। अतः चारित्र शुद्धि अधिकार में रात्रि भोजन त्याग को भी नहीं भूलना चाहिए। अतः इसके लिए आचार्यों ने १० उपवास बतलाये है अर्थात् रात्रि भोजन त्याग का एक भेद इसको नव कोटि से गुणा करने पर ९ भेद व अनिच्छा भेद भी सम्मिलित है। इस प्रकार १० उपवास व १० पारणे होते हैं।

# उपसंहार

त्रयोदशविधस्यैव चारित्रस्य विशुद्धये।
विधौ चारित्रशुद्धोस्युरुपवासाः प्रकीर्तिताः।।१०६।।

इस प्रकार तेरह चारित्र की शद्धि करने के लिए उक्त प्रकार १२३४ उपवास व १२३४ पारणे करने चाहिए।

उपवासों की संख्या इस यंत्र से स्पष्ट जानना चाहिए:-

| | | |
|---|---|---|
| अहिंसा महाव्रत | – | १२६ |
| सत्य महाव्रत | – | ७२ |
| अचौर्य महाव्रत | – | ७२ |
| ब्रह्मचर्य महाव्रत | – | १८० |
| अपरिग्रह महाव्रत | – | २१६ |
| रात्रिभोजन त्याग अणुव्रत | – | १० |
| ईर्यासमिति | – | ९ |
| भाषा समिति | – | ९० |
| एषणा समिति | – | ४९४ |
| आदान निक्षेपण समिति | – | ९ |
| प्रतिष्ठापना समिति | – | ९ |
| कायगुप्ति | – | ९ |
| बचन गुप्ति | – | ९ |
| मनो गुप्ति | – | ९ |
| | | १२३४ |

इस प्रकार १२३४ उपवास व इतने ही पारणे होते हैं।

# विधि

प्रथम उपवास प्रथम पारणा, द्वितीय उपवास द्वितीय पारणा, तीसरा उपवास तीसरा पारणा, इस प्रकार आगे–आगे करते रहने से यह व्रत ६ वर्ष १० महीने और ८ दिन में पूर्ण होता है और महीने में १० उपवास करने पर १० वर्ष ३ माह १५ दिन में पूर्ण होते हैं।

कदाचित ऐसी शक्ति न हो तो बीच–बीच में भी उपवास किये जा सकते हैं और २५–३० वर्ष से समाप्त किये जा सकते हैं पर उपवासों की संख्या कुल १२३४ होने चाहिए।

जो महापुरुष इस व्रत को निरतिचार पालन करता है उसके १३ प्रकार का निर्मल चारित्र पलता है। इस व्रत का विधान हरिवंशपुराण के ३४वें सर्ग लिया गया है।

।। श्रीवीतरागाय नमः ।।

# अथ चारित्रशुद्धिमंत्रजाप्याः

—: o :—

## अहिंसाव्रतस्य जाप्य मंत्र

ॐ ह्रीं मनसा कृत बादरपर्याप्तैकेंद्रियहिंसाविरति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। १।।

ॐ ह्रीं मनसा कारितबादरपर्याप्तैकेंद्रियहिंसाविरति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।

ॐ ह्रीं मनसानुमोदिबादरपर्याप्तैकेंद्रियहिंसा विरति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।३।।

ॐ ह्रीं वचसा कृतबादरपर्याप्तैकेंद्रियहिंसाविरति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ४।।

ॐ ह्रीं वचसा कारितबादरपर्याप्तैकेंद्रियहिंसाविरति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ५।।

ॐ ह्रीं वचसानुमोदितबादरपर्याप्तैकेंद्रियहिंसाविरति महाव्रतप्रोषद्योतनाय नमः।। ६।।

ॐ ह्रीं वपुषा कृतबादरपर्याप्तैकेंद्रियहिंसाविरतिमहाव्रत प्रोषद्योतनाय नमः।। ७।।

ॐ ह्रीं वपुषा कारितबादपर्याप्तैकेंद्रियहिंसाविरति महाव्रतप्रोषद्योतनाय नमः।। ८।।

ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितबादरपर्याप्तैकेंद्रियहिंसाविरति महाव्रतप्रोषद्योतनाय नमः।। ९।।

इति अहिंसाव्रतस्य प्रथमः प्रकारः।।१।।

ॐ ह्रीं मनसा कृतबादरापर्याप्तैकेंद्रियहिंसाविरति महाव्रतप्रोषद्योतनाय नमः।। १।।

ॐ ह्रीं मनसा कारितबादरापर्याप्तैकेंद्रियहिंसाविरति महाव्रतप्रोषद्योतनाय नमः।। २।।

ॐ ह्रीं मनसानुमोदितबादरापर्याप्तैकेंद्रियहिंसाविरति महाव्रतप्रोषद्योतनाय नमः।। ३।।

ॐ ह्रीं वचसा कृतबादरापर्याप्तैकेंद्रियहिंसाविरति महाव्रतप्रोषद्योतनाय नमः।। ४।।

ॐ ह्रीं वचसा कारितबादरापर्याप्तैकेंद्रियहिंसाविरति महाव्रतप्रोषद्योतनाय नमः।। ५।।

ॐ ह्रीं वचसानुमोदितबादरापर्याप्तैकेंद्रियहिंसाविरति महाव्रतप्रोषद्योतनाय नमः।। ६।।

ॐ ह्रीं वपुषा कृारितबादरापर्याप्तैकेंद्रियहिंसाविरति महाव्रतप्रोषद्योतनाय नमः।। ७।।

ॐ ह्रीं वपुषा कारितबादरापर्याप्तैकेंद्रियहिंसाविरति महाव्रतप्रोषद्योतनाय नमः।। ८।।

ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितबादरापर्याप्तैकेंद्रियहिंसाविरति महाव्रतप्रोषद्योतनाय नमः।। ९।।

इत्यहिंसाव्रतस्य द्वितीय : प्रकारः २

ॐ ह्रीं मनसा कृतसूक्ष्मपर्याप्तैकेंद्रियहिंसा विरतिमहाव्रतप्रोषद्योतनाय नमः।। १।।

ॐ ह्रीं मनसा कारितसूक्ष्मपर्याप्तैकेंद्रियहिंसा विरतिमहाव्रतप्रोषद्योतनाय नमः।। २।।

ॐ ह्रीं मनसानुमोदितसूक्ष्मपर्याप्तैकेंद्रियहिंसा विरतिमहाव्रतप्रोषद्योतनाय नमः।। ३।।

ॐ ह्रीं वचसा कृतसूक्ष्मपर्याप्तैकेंद्रियहिंसा विरतिमहाव्रतप्रोषद्योतनाय नमः।। ४।।

ॐ ह्रीं वचसा कारितसूक्ष्मपर्याप्तैकेंद्रियहिंसा विरतिमहाव्रतप्रोषद्योतनाय नमः।। ५।।

ॐ ह्रीं वचसानुमोदितसूक्ष्मपर्याप्तैकेंद्रियहिंसा विरतिमहाव्रतप्रोषद्योतनाय नमः।। ६।।

ॐ ह्रीं वपुषा कृतसूक्ष्मपर्याप्तैकेंद्रियहिंसा विरतिमहाव्रतप्रोषद्योतनाय नमः।। ७।।

ॐ ह्रीं वपुषा कारितसूक्ष्मपर्याप्तैकेंद्रियहिंसा विरतिमहाव्रतप्रोषद्योतनाय नमः।। ८।।

ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितसूक्ष्मपर्याप्तैकेंद्रियहिंसा विरतिमहाव्रतप्रोषद्योतनाय नमः।। ९।।

इत्यहिंसाव्रतस्य तृतीयः प्रकारः ३

ॐ ह्रीं मनसाकृतसूक्ष्मापर्याप्तैकेंद्रियहिंसाविरति महाव्रतप्रोषद्योतनाय नमः।। १।।

ॐ ह्रीं मनसा कारितसूक्ष्मापर्याप्तैकेंद्रियहिंसाविरति महाव्रतप्रोषद्योतनाय नमः।। २।।

ॐ ह्रीं मनुसानुमोदितसूक्ष्मापर्याप्तैकेंद्रियहिंसाविरति महाव्रतप्रोषद्योतनाय नमः।। ३।।

ॐ ह्रीं वचसा कृतसूक्ष्मापर्याप्तैकेंद्रियहिंसाविरति महाव्रतप्रोषद्योतनाय नमः।। ४।।

ॐ ह्रीं वचसा कारितसूक्ष्मापर्याप्तैकेंद्रियहिंसाविरति महाव्रतप्रोषद्योतनाय नमः।। ५।।

ॐ ह्रीं वचसानुमोदितसूक्ष्मापर्याप्तैकेंद्रियहिंसाविरति महाव्रतप्रोषद्योतनाय नमः।। ६।।

ॐ ह्रीं वपुषा कृतसूक्ष्मापर्याप्तैकेंद्रियहिंसाविरति महाव्रतप्रोषद्योतनाय नमः।। ७।।

ॐ ह्रीं वपुषा कारितसूक्ष्मापर्याप्तैकेंद्रियहिंसा विरतिमहाव्रतप्रोषद्योतनाय नमः।। ८।।

ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितसूक्ष्मापर्याप्तैकेंद्रियहिंसाविरति महाव्रतप्रोषद्योतनाय नमः।। ९।।

इत्यहिंसाव्रतस्य चतुर्थः प्रकार : ४

ॐ ह्रीं मनसा कृतद्वीन्द्रियपर्याप्तहिंसाविरतिमहाव्रत प्रोषद्योतनाय नमः।। १।।

ॐ ह्रीं मनसा कारितद्वीन्द्रियपर्याप्तहिंसाविरतिमहाव्रत प्रोषद्योतनायं नमः।। २।।

ॐ ह्रीं मनसानुमोदितद्वीन्द्रियपर्याप्तहिंसाविरतिमहाव्रत प्रोषद्योतनाय नमः।। ३।।

ॐ ह्रीं वचसा कृतद्वीन्द्रियपर्याप्तहिंसाविरतिमहाव्रत प्रोषद्योतनाय नमः।। ४।।

ॐ ह्रीं वचसा कारितद्वीन्द्रियपर्याप्तहिंसाविरतिमहाव्रत प्रोषद्योतनाय नमः।। ५।।

ॐ ह्रीं वचसानुमोदितद्वीन्द्रियपर्याप्तहिंसाविरतिमहाव्रत प्रोषद्योतनाय नमः।। ६।।

ॐ ह्रीं वपुषा कृतद्वीन्द्रियपर्याप्तहिंसाविरतिमहाव्रत प्रोषद्योतनाय नमः।। ७।।

ॐ ह्रीं वपुषा कारितद्वीन्द्रियपर्याप्तहिंसाविरतिमहाव्रत प्रोषद्योतनाय नमः।। ८।।

ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितद्वीन्द्रियपर्याप्तहिंसाविरतिमहाव्रत प्रोषद्योतनाय नमः।। ९।।

इति हिंसाविरतिव्रतस्य पंचम : प्रकार : ५

ॐ ह्रीं मनसा कृतद्वीन्द्रियापर्याप्तहिंसाविरतिमहाव्रत प्रोषद्योतनाय नमः।। १।।

ॐ ह्रीं मनसा कारितद्वीन्द्रियापर्याप्तहिंसाविरतिमहाव्रत प्रोषद्योतनाय नमः।। २।।

ॐ ह्रीं मनसानुमोदितद्वीन्द्रियापर्याप्तहिंसाविरतिमहाव्रत प्रोषद्योतनाय नमः।। ३।।

ॐ ह्रीं वचसा कृतद्वीन्द्रियापर्याप्तहिंसाविरतिमहाव्रत प्रोषद्योतनाय नमः।। ४।।

ॐ ह्रीं वचसा कारितद्वीन्द्रियापर्याप्तहिंसाविरतिमहाव्रत प्रोषद्योतनाय नमः।। ५।।

ॐ ह्रीं वचसानुमोदितद्वीन्द्रियापर्याप्तहिंसाविरतिमहाव्रत प्रोषद्योतनाय नमः।। ६।।

ॐ ह्रीं वपुषा कृतद्वीन्द्रियापर्याप्तहिंसाविरतिमहाव्रत प्रोषद्योतनाय नमः।। ७।।

ॐ ह्रीं वपुषा कारितद्वीन्द्रियापर्याप्तहिंसाविरतिमहाव्रत प्रोषद्योतनाय नमः।। ८।।

ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितद्वीन्द्रियापर्याप्तहिंसाविरतिमहाव्रत प्रोषद्योतनाय नमः।। ९।।

इत्यहिंसाव्रतस्य षष्ठः प्रकारः ६

ॐ ह्रीं मनसा कृतत्रींद्रियपर्याप्तहिंसाविरतिमहाव्रत प्रोषद्योतनाय नमः।। १।।

ॐ ह्रीं मनसा कारितत्रींद्रियपर्याप्तहिंसाविरतिमहाव्रत प्रोषद्योतनाय नमः।। २।।

ॐ ह्रीं मनसानुमोदितत्रींन्द्रियपर्याप्तहिंसाविरतिमहाव्रत प्रोषद्योतनाय नमः।। ३।।

ॐ ह्रीं वचसा कृतत्रींद्रियपर्याप्तहिंसाविरतिमहाव्रत प्रोषद्योतनाय नमः।। ४।।

ॐ ह्रीं वचसा कारितत्रींद्रियपर्याप्तहिंसाविरतिमहाव्रत प्रोषद्योतनाय नमः।। ५।।

ॐ ह्रीं वचसानुमोदितत्रींद्रियपर्याप्तहिंसाविरतिमहाव्रत प्रोषद्योतनाय नमः।। ६।।

ॐ ह्रीं वपुषा कृतत्रींद्रियपर्याप्तहिंसाविरतिमहाव्रत प्रोषद्योतनाय नमः।। ७।।

ॐ ह्रीं वपुषा कारितत्रींद्रियपर्याप्तहिंसाविरतिमहाव्रत प्रोषद्योतनाय नमः।। ८।।

ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितत्रींद्रियपर्याप्तहिंसाविरतिमहाव्रत प्रोषद्योतनाय नमः।। ९।।

इति अहिंसाव्रतस्य सप्तमः प्रकार : ७

ॐ ह्रीं मनसा कृतत्रींद्रियापर्याप्त हिंसाविरति महाव्रताय नमः।। १।।

ॐ ह्रीं मनसा कारितत्रींद्रियापर्याप्तहिंसाविरति महाव्रताय नमः।। २।।

ॐ ह्रीं मनसानु मोदितत्रींद्रियापर्याप्तहिंसाविरति महाव्रताय नमः।। ३।।

ॐ ह्रीं वचसा कृतत्रींद्रियापर्याप्त हिंसाविरति महाव्रताय नमः।। ४।।

ॐ ह्रीं वचसा कारितत्रींद्रियापर्याप्तहिंसाविरति महाव्रताय नमः।। ५।।

ॐ ह्रीं वचसानुमोदितत्रींद्रियापर्याप्तहिंसाविरति महाव्रताय नमः।। ६।।

ॐ ह्रीं वपुसाकृतत्रींद्रियापर्याप्तहिंसाविरति महाव्रताय नमः।। ७।।

ॐ ह्रीं मनसा कारिततत्रींद्रियापर्याप्तहिंसाविरति महाव्रताय नमः।। ८।।

ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितत्रींद्रियापर्याप्तहिंसाविरति महाव्रताय नमः।। ९।।

इति अहिंसाव्रतस्याष्टम प्रकार ८

ॐ ह्रीं मनसा कृतचतुरिंद्रियपर्याप्तहिंसाविरति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। १।।

ॐ ह्रीं मनसा कारितचतुरिंद्रियपर्याप्तहिंसाविरति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। २।।

ॐ ह्रीं मनसानु मोदितचतुरिंद्रियपर्याप्तहिंसाविरति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ३।।

ॐ ह्रीं वचसा कृतचतुरिंद्रियपर्याप्तहिंसाविरति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ४।।

ॐ ह्रीं वचसा कारितचतुरिंद्रियपर्याप्तहिंसाविरति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ५।।

ॐ ह्रीं वचसानुमोदितचतुरिंद्रियपर्याप्तहिंसाविरति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ६।।

ॐ ह्रीं वपुषा कृतचतुरिंद्रियपर्याप्तहिंसाविरति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ७।।

ॐ ह्रीं वपुषा कारितचतुरिंद्रियपर्याप्तहिंसाविरति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ८।।

ॐ ह्रीं वपुषानुमोदिततचतुरिंद्रियपर्याप्तहिंसाविरति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ९।।

इति हिंसाविरतिमहाव्रतस्य नवमः प्रकार : ९

ॐ ह्रीं मनसा कृतचतुरिंद्रियापर्याप्तहिंसाविरति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। १।।

ॐ ह्रीं मनसा कारितचतुरिंद्रियापर्याप्तहिंसाविरति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। २।।

ॐ ह्रीं मनसानु मोदितचतुरिंद्रियापर्याप्तहिंसाविरति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ३।।

ॐ ह्रीं वचसा कृतचतुरिंद्रियापर्याप्तहिंसाविरति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ४।।

ॐ ह्रीं वचसा कारितचतुरिंद्रियापर्याप्तहिंसाविरति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ५।।

ॐ ह्रीं वचसानुमोदिततचतुरिंद्रियापर्याप्तहिंसाविरति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ६।।

ॐ ह्रीं वपुषा कृतचतुरिंद्रियापर्याप्तहिंसाविरति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ७।।

ॐ ह्रीं वपुषा कारितचतुरिंद्रियापर्याप्तहिंसाविरति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ८।।

ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितचतुरिंद्रियापर्याप्तहिंसाविरति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ९।।

इत्यहिंसाव्रतस्य दशमः प्रकार १०

ॐ ह्रीं मनसाकृतसंज्ञिपंचेंद्रियपर्याप्तहिंसाविरति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। १।।

ॐ ह्रीं मनसाकारितसंज्ञिपंचेंद्रियपर्याप्तहिंसाविरति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। २।।

ॐ ह्रीं मनसानुमोदितसंज्ञिपंचेंद्रियपर्याप्तहिंसाविरति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ३।।

ॐ ह्रीं वचसाकृतसंज्ञिपंचेंद्रियपर्याप्तहिंसाविरति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ४।।

ॐ ह्रीं वचसाकारितसंज्ञिपंचेंद्रियपर्याप्तहिंसाविरति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ५।।

ॐ ह्रींवचनानुमोदितसंज्ञिपंचेंद्रियपर्याप्तहिंसाविरति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ६।।

ॐ ह्रीं वपुषाकृतसंज्ञिपंचेंद्रियपर्याप्तहिंसाविरति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ७।।

ॐ ह्रीं वपुषाकारितसंज्ञिपंचेंद्रियपर्याप्तहिंसाविरति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ८।।

ॐ ह्रींवपुषानुमोदितसंज्ञिपंचेंद्रियपर्याप्तहिंसाविरति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ९।।

इतिहिंसाव्रतस्य एकादशः प्रकार :११

ॐ ह्रीं मनसाकृतसंज्ञिपंचेंद्रियापर्याप्तहिंसाविरति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। १।।

ॐ ह्रीं मनसाकारितसंज्ञिपंचेंद्रियापर्याप्तहिंसाविरति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। २।।

ॐ ह्रीं मनसानुमोदितसंज्ञिपंचेंद्रियापर्याप्तहिंसाविरति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ३।।

ॐ ह्रीं वचसाकृतसंज्ञिपंचेंद्रियापर्याप्तहिंसाविरति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ४।।

ॐ ह्रीं वचसाकारितसंज्ञिपंचेंद्रियापर्याप्तहिंसाविरति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ५।।

ॐ ह्रीं वचसानुमोदितसंज्ञिपंचेंद्रियापर्याप्तहिंसाविरति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ६।।

ॐ ह्रीं वपुसा कृतसंज्ञिपंचेंद्रियापर्याप्तहिंसाविरति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ७।।

ॐ ह्रीं वपुषा कारितसंज्ञिपंचेंद्रियापर्याप्तहिंसाविरति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ८।।

ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितसंज्ञिपंचेंद्रियापर्याप्तहिंसाविरति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ९।।

इति हिंसाविरतिव्रतस्य द्वादश. प्रकार : १२

ॐ ह्रीं मनसा कृतासंज्ञिपंचेंद्रियपर्याप्तहिंसाविरति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। १।।

ॐ ह्रीं मनसा कारितासंज्ञिपंचेंद्रियपर्याप्तहिंसाविरति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। २।।

ॐ ह्रीं मनसानु मोदितासंज्ञिपंचेंद्रियपर्याप्तहिंसाविरति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ३।।

ॐ ह्रीं वचसा कृतासंज्ञिपंचेंद्रियपर्याप्तहिंसाविरति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ४।।

ॐ ह्रीं वचसा कारितासंज्ञिपंचेंद्रियपर्याप्तहिंसाविरति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ५।।

ॐ ह्रीं वचसानुमोदितासंज्ञिपंचेंद्रियपर्याप्तहिंसाविरति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ६।।

ॐ ह्रीं वपुषा कृतासंज्ञिपंचेंद्रियपर्याप्तहिंसाविरति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ७।।

ॐ ह्रीं वपुषा कारितासंज्ञिपंचेंद्रियपर्याप्तहिंसाविरति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ८।।

ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितासंज्ञिपंचेंद्रियपर्याप्तहिंसाविरति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ९।।

इतिहिंसाव्रतस्य त्रयोदशः प्रकारः १३

ॐ ह्रीं मनसा कृतासंज्ञिपंचेंद्रियापर्याप्तहिंसाविरति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। १।।

ॐ ह्रीं मनसा कारितासंज्ञिपंचेंद्रियापर्याप्तहिंसाविरति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। २।।

ॐ ह्रीं मनसानु मोदितासंज्ञिपंचेंद्रियापर्याप्तहिंसाविरति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ३।।

ॐ ह्रीं वचसा कृतासंज्ञिपंचेंद्रियापर्याप्तहिंसाविरति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ४।।

ॐ ह्रीं वचसा कारितासंज्ञिपंचेंद्रियापर्याप्तहिंसाविरति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ५।।

ॐ ह्रीं वचसानुमोदितासंज्ञिपंचेंद्रियापर्याप्तहिंसाविरति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ६।।

ॐ ह्रीं वपुषा कृतासंज्ञिपंचेंद्रियापर्याप्तहिंसाविरति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ७।।

ॐ ह्रीं वपुषा कारितासंज्ञिपंचेंद्रियापर्याप्तहिंसाविरति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ८।।

ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितासंज्ञिपंचेंद्रियापर्याप्तहिंसाविरति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ९।।

इति अहिंसाव्रतस्य चतुर्दशः प्रकारः १४

# सत्यमहाव्रतस्य जाप्यमंत्र

ॐ ह्रीं मनसा कृताभिख्यासत्यविरतिमहाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। १।।
ॐ ह्रीं मनसा कारिताभिख्यासत्यविरतिमहाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। २।।
ॐ ह्रीं मनसानुमोदिताभिख्यासत्यविरतिमहाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। ३।।
ॐ ह्रीं वचसाकृताभिख्यासत्यविरतिमहाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। ४।।
ॐ ह्रीं वचसा कारिताभिख्यासत्यविरतिमहाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। ५।।
ॐ ह्रीं वचसानुमोदिताभिख्यासत्यविरतिमहाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। ६।।
ॐ ह्रीं वपुषा कृताभिख्यासत्यविरतिमहाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। ७।।
ॐ ह्रीं वपुषा कारिताभिख्यासत्यविरतिमहाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। ८।।
ॐ ह्रीं वपुषानुमोदिताभिख्यासत्यविरतिमहाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। ९।।

इति सत्यमहाव्रतस्य प्रथमः प्रकारः १५

ॐ ह्रीं मनसा कृतस्वपक्षासत्यविरति महा व्रताय नमः।। १।।

ॐ ह्रीं मनसा कारितस्वपक्षासत्यविरति महा व्रताय नमः।। २।।

ॐ ह्रीं मनसानुमोदितस्वपक्षासत्यविरति महा व्रताय नमः।। ३।।

ॐ ह्रीं वचसा कृतस्वपक्षासत्यविरति महा व्रताय नमः।। ४।।

ॐ ह्रीं वचसा कारितस्वपक्षासत्यविरति महा व्रताय नमः।। ५।।

ॐ ह्रीं वचसानुमोदितस्वपक्षासत्यविरति महा व्रताय नमः।। ६।।

ॐ ह्रीं वपुषा कृतस्वपक्षासत्यविरति महा व्रताय नमः।। ७।।

ॐ ह्रीं वपुषा कारितस्वपक्षासत्यविरति महा व्रताय नमः।। ८।।

ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितस्वपक्षासत्यविरति महा व्रताय नमः।। ९।।

इति सत्यव्रतस्य षोडशः प्रकारः १६

ॐ ह्रीं मनसा कृतपरपक्षासत्यविरति महाव्रताय नमः।। १।।

ॐ ह्रीं मनसा कारितपरपक्षासत्यविरतिमहाव्रताय नमः।। २।।

ॐ ह्रीं मनसानुमोदितपरपक्षासत्यविरतिमहाव्रतायनमः।। ३।।

ॐ ह्रीं वचसा कृतपरपक्षासत्यविरतिमहाव्रतायं नमः।। ४।।

ॐ ह्रीं वचसा कारितपरपक्षासत्यविरतिमहाव्रताय नमः।। ५।।

ॐ ह्रीं वचसानुमोदितपरपक्षासत्यविरतिमहाव्रताय नमः।। ६।।

ॐ ह्रीं वपुषा कृतपरपक्षासत्यविरतिमहाव्रताय नमः।। ७।।

ॐ ह्रीं वपुषा कारितपरपक्षासत्यविरतिमहाव्रताय नमः।। ८।।

ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितपरपक्षासत्यविरतिमहाव्रताय नमः।। ९।।

इति सत्यव्रतस्य तृतीयः प्रकारः १७

ॐ ह्रीं मनसा कृतपैशुन्यासत्यविरतिमहाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। १।।

ॐ ह्रीं मनसा कारितपैशुन्यासत्यविरतिमहाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। २।।

ॐ ह्रींमनसानुमोदितपैशुन्यासत्यविरतिमहाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। ३।।

ॐ ह्रीं वचसा कृतपैशुन्यासत्यविरतिमहाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। ४।।

ॐ ह्रीं वचसाकारितपैशुन्यासत्यविरतिमहाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। ५।।

ॐ ह्रीं वचसानुमोदितपैशुन्यासत्यविरतिमहाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। ६।।

ॐ ह्रीं वपुषा कृतपैशुन्यासत्यविरतिमहाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। ७।।

ॐ ह्रीं वपुषा कारितपैशुन्यासत्यविरतिमहाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। ८।।

ॐ ह्रींवपुषानुमोदितपैशुन्यासत्यविरतिमहाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। ६।।

इति सत्यमहाव्रतस्य चतुर्थः प्रभेद : १८

ॐ ह्रीं मनसा कृतक्रोधासत्यविरतिमहाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। १।।

ॐ ह्रीं मनसा कारितक्रोधासत्यविरतिमहाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। २।।

ॐ ह्रीं मनसानुमोदितक्रोधासत्यविरतिमहाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। ३।।

ॐ ह्रीं वचसा कृतक्रोधासत्यविरतिमहाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। ४।।

ॐ ह्रीं वचसा कारितक्रोधासत्यविरतिमहाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। ५।।

ॐ ह्रीं वचसानुमोदितक्रोधासत्यविरतिमहाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। ६।।

ॐ ह्रीं वपुषा कृतक्रोधासत्यविरतिमहाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। ७।।

ॐ ह्रीं वपुषा कारितक्रोधासत्यविरतिमहाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। ८।।

ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितक्रोधासत्यविरतिमहाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति सत्यव्रतस्य पंचमः प्रकारः १६

ॐ ह्रीं मनसा कृतलोभासत्यविरतिमहाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। १।।

ॐ ह्रीं मनसा कारितलोभासत्यविरतिमहाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। २।।

ॐ ह्रीं मनसानुमोदितलोभासत्यविरतिमहाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। ३।।

ॐ ह्रीं वचसा कृतलोभासत्यविरतिमहाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। ४।।

ॐ ह्रीं वचसा कारितलोभासत्यविरतिमहाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। ५।।

ॐ ह्रीं वचसानुमोदितलोभासत्यविरतिमहाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। ६।।

ॐ ह्रीं वपुषा कृतलोभासत्यविरतिमहाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। ७।।

ॐ ह्रीं वपुषा कारितलोभासत्यविरतिमहाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। ८।।

ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितलोभासत्यविरतिमहाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। ९।।

इति सत्यव्रतस्य षष्ठः प्रकारः २०

ॐ ह्रीं मनसा कृतात्मप्रशंसासत्यविरतिमहाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। १।।

ॐ ह्रीं मनसा कारितात्मप्रशंसासत्यविरति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। २।।

ॐ ह्रीं मनसानुमोदितात्मप्रशंसासत्यविरति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ३।।

ॐ ह्रीं वचसा कृतात्मप्रशंसासत्यविरतिमहाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। ४।।

ॐ ह्रीं वचसा कारितात्मप्रशंसासत्यविरतिमहाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। ५।।

ॐ ह्रीं वचसानुमोदितात्मप्रशंसासत्यविरतिमहाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। ६।।

ॐ ह्रीं वपुषा कृतात्मप्रशंसासत्यविरतिमहाव्रत, प्रोषधोद्योतनाय नमः।। ७।।

ॐ ह्रीं वपुषा कारितात्मप्रशंसासत्यविरतिमहाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। ८।।

ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितात्मप्रशंसासत्यविरतिमहाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। ९।।

इति सत्यव्रतस्य सप्तमः प्रकार २१

**ॐ ह्रीं मनसा कृतपराप्रशंसनासत्यविरतिमहाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। १।।**

**ॐ ह्रीं मनसा कारितपराप्रशंसनासत्यविरतिमहाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। २।।**

**ॐ ह्रीं मनसानुमोदितपराप्रशंसनासत्यविरतिमहाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। ३।।**

**ॐ ह्रीं वचसा कृतपराप्रशंसनासत्यविरतिमहाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। ४।।**

**ॐ ह्रीं वचसा कारितपराप्रशंसनासत्यविरतिमहाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। ५।।**

**ॐ ह्रीं वचसानुमोदितपराप्रशंसनासत्यविरतिमहाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। ६।।**

**ॐ ह्रीं वपुषा कृतपराप्रशंसनासत्यविरतिमहाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। ७।।**

**ॐ ह्रीं वपुषा कारितपराप्रशंसनासत्यविरतिमहाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। ८।।**

**ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितपराप्रशंसनासत्यविरतिमहाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। ९।।**

इति सत्यव्रतस्याष्टमः प्रकारः २२

# अथाचौर्यव्रतस्य जाप्यमंत्राः

ॐ ह्रीं मनसा कृतग्रामादत्तग्रहणविरतिमहाव्रतप्रोषधो द्योतनाय नमः।। १।।

ॐ ह्रीं मनसा कारितग्रामादत्तग्रहणविरतिमहाव्रतप्रोषधो द्योतनाय नमः।। २।।

ॐ ह्रीं मनसानुमोदितग्रामादत्तग्रहणविरतिमहाव्रतप्रोषधो द्योतनाय नमः।। ३।।

ॐ ह्रीं वचसा कृतग्रामादत्तग्रहणविरतिमहाव्रतप्रोषधो द्योतनाय नमः।। ४।।

ॐ ह्रीं वचसा कारितग्रामादत्तग्रहणविरतिमहाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। ५।।

ॐ ह्रीं वचसानुमोदितग्रामादत्तग्रहणविरतिमहाव्रतप्रोषधो द्योतनाय नमः।। ६।।

ॐ ह्रीं वपुषा कृतग्रामादत्तग्रहणविरतिमहाव्रतप्रोषधो द्योतनाय नमः।। ७।।

ॐ ह्रीं वपुषा कारितग्रामादत्तग्रहणविरतिमहाव्रतप्रोषधो द्योतनाय नमः।। ८।।

ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितग्रामादत्तग्रहणविरतिमहाव्रतप्रोषधो द्योतनाय नमः।। ९।।

इति अचौर्यव्रतस्य प्रथमः प्रकारः २३

ॐ ह्रीं मनसा कृतारण्यादत्तग्रहणविरतिमहाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। १।।

ॐ ह्रीं मनसा कारितारण्यादत्तग्रहणविरतिमहाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। २।।

ॐ ह्रीं मनसानुमोदितारण्यादत्तग्रहणविरतिमहाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। ३।।

ॐ ह्रीं वचसा कृतारण्यादत्तग्रहणविरतिमहाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। ४।।

ॐ ह्रीं वचसा कारितारण्यादत्तग्रहणविरतिमहाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। ५।।

ॐ ह्रीं वचसानुमोदितारण्यादत्तग्रहणविरतिमहाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। ६।।

ॐ ह्रीं वपुसा कृतारण्यादत्तग्रहणविरतिमहाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। ७।।

ॐ ह्रीं वपुषा कारितारण्यादत्तग्रहणविरतिमहाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। ८।।

ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितारण्यादत्तग्रहणविरतिमहाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। ९।।

इति अचौर्यव्रतस्य द्वितीयः प्रकारः २४

ॐ ह्रीं मनसा कृतखलादत्तग्रहणविरतिमहाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। १।।

ॐ ह्रीं मनसा कारितखलादत्तग्रहणविरतिमहाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। २।।

ॐ ह्रीं मनसानुमोदितखलादत्तग्रहणविरतिमहाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। ३।।

ॐ ह्रीं वचसा कृतखलादत्तग्रहणविरतिमहाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। ४।।

ॐ ह्रीं वचसा कारितखलादत्तग्रहणविरतिमहाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। ५।।

ॐ ह्रीं वचसानुमोदितखलादत्तग्रहणविरतिमहाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। ६।।

ॐ ह्रीं वपुषा कृतखलादत्तग्रहणविरतिमहाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। ७।।

ॐ ह्रीं वपुषा कारितखलादत्तग्रहणविरतिमहाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। ८।।

ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितखलादत्तग्रहणविरतिमहाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। ९।।

इति अचौर्यव्रतस्य तृतीयः प्रकारः २५

ॐ ह्रीं मनसा कृतैकांतादत्तग्रहणविरतिमहाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। १।।

ॐ ह्रीं मनसा कारितैकांतादत्तग्रहणविरतिमहाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। २।।

ॐ ह्रीं मनसानुमोदितैकांतादत्तग्रहणविरतिमहाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। ३।।

ॐ ह्रीं वचसा कृतैकांतादत्तग्रहणविरतिमहाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। ४।।

ॐ ह्रीं वचसा कारितैकांतादत्तग्रहणविरतिमहाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। ५।।

ॐ ह्रीं वचसानुमोदितैकांतादत्तग्रहणविरतिमहाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। ६।।

ॐ ह्रीं वपुषा कृतैकांतादत्तग्रहणविरतिमहाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। ७।।

ॐ ह्रीं वपुषा कारितैकांतादत्तग्रहणविरतिमहाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। ८।।

ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितैकांतादत्तग्रहणविरतिमहाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। ९।।

इति अचौर्यव्रतस्य चतुर्थः प्रकारः २६

ॐ ह्रीं मनसा कृतान्यत्रादत्तग्रहणविरतिमहाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। १।।

ॐ ह्रीं मनसा कारितान्यत्रादत्तग्रहणविरतिमहाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। २।।

ॐ ह्रीं मनसानुमोदितान्यत्रादत्तग्रहणविरतिमहाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। ३।।

ॐ ह्रीं वचसा कृतान्यत्रादत्तग्रहणविरतिमहाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। ४।।

ॐ ह्रीं वचसा कारितान्यत्रादत्तग्रहणविरतिमहाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। ५।।

ॐ ह्रीं वचसानुमोदितान्यत्रादत्तग्रहणविरतिमहाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। ६।।

ॐ ह्रीं वपुषा कृतान्यत्रादत्तग्रहणविरतिमहाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। ७।।

ॐ ह्रीं वपुषा कारितान्यत्रादत्तग्रहणविरतिमहाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। ८।।

ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितान्यत्रादत्तग्रहणविरतिमहाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। ९।।

इति अचौर्यव्रतस्य पंचमः प्रकारः २७

ॐ ह्रीं मनसा कृतपानादत्तग्रहणविरतिमहाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। १।।

ॐ ह्रीं मनसा कारितपानादत्तग्रहणविरतिमहाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। २।।

ॐ ह्रीं मनसानुमोदितपानादत्तग्रहणविरतिमहाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। ३।।

ॐ ह्रीं वचसा कृतपानादत्तग्रहणविरतिमहाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। ४।।

ॐ ह्रीं वचसा कारितपानादत्तग्रहणविरतिमहाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। ५।।

ॐ ह्रीं वचसानुमोदितपानादत्तग्रहणविरतिमहाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। ६।।

ॐ ह्रीं वपुषा कृतपानादत्तग्रहणविरतिमहाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। ७।।

ॐ ह्रीं वपुषा कारितपानादत्तग्रहणविरतिमहाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। ८।।

ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितपानादत्तग्रहणविरतिमहाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। ९।।

इति अचौर्यव्रतस्य षष्ठः प्रकारः २८

ॐ ह्रीं मनसा कृताऽहारादत्तग्रहणविरतिमहाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। १।।

ॐ ह्रीं मनसा कारिताऽहारादत्तग्रहणविरतिमहाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। २।।

ॐ ह्रीं मनसानुमोदिताऽहारादत्तग्रहणविरतिमहाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। ३।।

ॐ ह्रीं वचसा कृताऽहारादत्तग्रहणविरतिमहाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। ४।।

ॐ ह्रीं वचसा कारिताऽहारादत्तग्रहणविरतिमहाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। ५।।

ॐ ह्रीं वचसानुमोदिताऽहारादत्तग्रहणविरतिमहाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। ६।।

ॐ ह्रीं वपुषा कृताऽहारादत्तग्रहणविरतिमहाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। ७।।

ॐ ह्रीं वपुषा कारिताऽहारादत्तग्रहणविरतिमहाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। ८।।

ॐ ह्रीं वपुषानुमोदिताऽहारादत्तग्रहणविरतिमहाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। ९।।

इति अचौर्यव्रतस्य सप्तमः प्रकारः २९

ॐ ह्रीं मनसा कृतापृच्छादत्तग्रहणविरतिमहाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। १।।

ॐ ह्रीं मनसा कारितापृच्छादत्तग्रहणविरतिमहाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। २।।

ॐ ह्रीं मनसानुमोदितापृच्छादत्तग्रहणविरतिमहाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। ३।।

ॐ ह्रीं वचसा कृतापृच्छादत्तग्रहणविरतिमहाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। ४।।

ॐ ह्रीं वचसा कारितापृच्छादत्तग्रहणविरतिमहाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। ५।।

ॐ ह्रीं वचसानुमोदितापृच्छादत्तग्रहणविरतिमहाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। ६।।

ॐ ह्रीं वपुषा कृतापृच्छादत्तग्रहणविरतिमहाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। ७।।

ॐ ह्रीं वपुषा कारितापृच्छादत्तग्रहणविरतिमहाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। ८।।

ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितापृच्छादत्तग्रहणविरतिमहाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। ९।।

इत्यचौर्यव्रतस्याष्टमः प्रकारः ३०

# ब्रह्मचर्य व्रतस्य जाप्य मंत्राः

ॐ ह्रीं मनसाकृतनरस्त्रीस्पर्शनेंद्रियविषयाब्रह्मविरति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। १।।

ॐ ह्रीं मनसा कारितनरस्त्रीस्पर्शनेंद्रियविषयाब्रह्मविरति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। २।।

ॐ ह्रीं मनसानुमोदितनरस्त्रीस्पर्शनेंद्रियविषयाब्रह्मविरति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ३।।

ॐ ह्रीं वचसा कृतनरस्त्रीस्पर्शनेंद्रियविषयाब्रह्मविरति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ४।।

ॐ ह्रीं वचसा कारितनरस्त्रीस्पर्शनेंद्रियविषयाब्रह्मविरति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ५।।

ॐ ह्रीं वचसानुमोदितनरस्त्रीस्पर्शनेंद्रियविषया ब्रह्मविरति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ६।।

ॐ ह्रीं वपुषा कृतनरस्त्रीस्पर्शनेंद्रियविषया ब्रह्मविरति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ७।।

ॐ ह्रीं वपुषा कारितनरस्त्रीस्पर्शनेंद्रियविषया ब्रह्मविरति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ८।।

ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितनरस्त्रीस्पर्शनेंद्रियविषया ब्रह्मविरति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ९।।

इति ब्रह्मव्रतस्य प्रथमभेदः ३१

ॐ ह्रीं मनसा कृतनरस्त्रीरसनेंद्रियविषयाब्रह्मविरति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। १।।

ॐ ह्रीं मनसा कारितनरस्त्रीरसनेंद्रियविषयाब्रह्मविरति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। २।।

ॐ ह्रीं मनसानुमोदितनरस्त्रीरसनेंद्रियविषयाब्रह्मविरति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ३।।

ॐ ह्रीं वचसा कृतनरस्त्रीरसनेंद्रियविषयाब्रह्मविरति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ४।।

ॐ ह्रीं वचसा कारितनरस्त्रीरसनेंद्रियविषयाब्रह्मविरति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ५।।

ॐ ह्रीं वचसानुमोदितनरस्त्रीरसनेंद्रियविषयाब्रह्मविरति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ६।।

ॐ ह्रीं वपुषा कृतनरस्त्रीरसनेंद्रियविषयाब्रह्मविरति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ७।।

ॐ ह्रीं वपुषा कारितनरस्त्रीरसनेंद्रियविषयाब्रह्मविरति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ८।।

ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितनरस्त्रीरसनेंद्रियविषयाब्रह्मविरति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ९।।

इति ब्रह्मव्रतस्य द्वितीय प्रकार ३२

ॐ ह्रीं मनसा कृतनररस्त्रीघ्राणेंद्रियविषयाब्रह्मविरति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। १।।

ॐ ह्रीं मनसा कारितनररस्त्रीघ्राणेंद्रियविषयाब्रह्मविरति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। २।।

ॐ ह्रीं मनसानुमोदितनररस्त्रीघ्राणेंद्रियविषयाब्रह्मविरति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ३।।

ॐ ह्रीं वचसा कृतनररस्त्रीघ्राणेंद्रियविषयाब्रह्मविरति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ४।।

ॐ ह्रीं वचसा कारितनररस्त्रीघ्राणेंद्रियविषयाब्रह्मविरति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ५।।

ॐ ह्रीं वचसानुमोदितनररस्त्रीघ्राणेंद्रियविषयाब्रह्मविरति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ६।।

ॐ ह्रीं वपुषा कृतनररस्त्रीघ्राणेंद्रियविषयाब्रह्मविरति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ७।।

ॐ ह्रीं वपुषा कारितनररस्त्रीघ्राणेंद्रियविषयाब्रह्मविरति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ८।।

ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितनररस्त्रीघ्राणेंद्रियविषयाब्रह्मविरति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ९।।

इति ब्रह्मव्रतस्य तृतीयः प्रकारः ३३

ॐ ह्रीं मनसा कृतनररस्त्रीचक्षुरिंद्रियविषयाब्रह्मविरति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। १।।

ॐ ह्रीं मनसा कारितनररस्त्रीचक्षुरिंद्रियविषयाब्रह्मविरति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। २।।

ॐ ह्रीं मनसानुमोदितनररस्त्रीचक्षुरिंद्रियविषयाब्रह्मविरति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ३।।

ॐ ह्रीं वचसा कृतनररस्त्रीचक्षुरिंद्रियविषयाब्रह्मविरति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ४।।

ॐ ह्रीं वचसा कारितनररस्त्रीचक्षुरिंद्रियविषयाब्रह्मविरति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ५।।

ॐ ह्रीं वचसानुमोदितनररस्त्रीचक्षुरिंद्रियविषयाब्रह्मविरति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ६।।

ॐ ह्रीं वपुषा कृतनररस्त्रीचक्षुरिंद्रियविषयाब्रह्मविरतिम हाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ७।।

ॐ ह्रीं वपुषा कारितनररस्त्रीचक्षुरिंद्रियविषयाब्रह्मविरति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ८।।

ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितनररस्त्रीचक्षुरिंद्रियविषयाब्रह्मविरति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ९।।

इति ब्रह्मव्रतस्य चतुर्थः प्रकार ३४

ॐ ह्रीं मनसा कृतनरस्त्रीकर्णेंद्रियविषयाब्रह्मविरति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। १।।
ॐ ह्रीं मनसा कारितनरस्त्रीकर्णेंद्रियविषयाब्रह्मविरति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। २।।
ॐ ह्रीं मनसानुमोदितनरस्त्रीकर्णेंद्रियविषयाब्रह्मविरति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ३।।
ॐ ह्रीं वचसा कृतनरस्त्रीकर्णेंद्रियविषयाब्रह्मविरति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ४।।
ॐ ह्रीं वचसा कारितनरस्त्रीकर्णेंद्रियविषयाब्रह्मविरति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ५।।
ॐ ह्रीं वचसानुमोदितनरस्त्रीकर्णेंद्रियविषयाब्रह्मविरति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ६।।
ॐ ह्रीं वपुषा कृतनरस्त्रीकर्णेंद्रियविषयाब्रह्मविरति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ७।।
ॐ ह्रीं वपुषा कारितनरस्त्रीकर्णेंद्रियविषयाब्रह्मविरति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ८।।
ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितनरस्त्रीकर्णेंद्रियविषयाब्रह्मविरति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ९।।

इति ब्रह्मविरतिव्रतस्य पंचमः प्रकारः ३५

ॐ ह्रीं मनसा कृतदेवस्त्रीस्पर्शनेंद्रियविषयाब्रह्मविरति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। १।।

ॐ ह्रीं मनसा कारितदेवस्त्रीस्पर्शनेंद्रियविषयाब्रह्मविरति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। २।।

ॐ ह्रीं मनसानुमोदितदेवस्त्रीस्पर्शनेंद्रियविषयाब्रह्मविरति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ३।।

ॐ ह्रीं वचसा कृतदेवस्त्रीस्पर्शनेंद्रियविषयाब्रह्मविरति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ४।।

ॐ ह्रीं वचसा कारितदेवस्त्रीस्पर्शनेंद्रियविषयाब्रह्मविरति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ५।।

ॐ ह्रीं वचसानुमोदितदेवस्त्रीस्पर्शनेंद्रियविषयाब्रह्मविरति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ६।।

ॐ ह्रीं वपुषा कृतदेवस्त्रीस्पर्शनेंद्रियविषयाब्रह्मविरति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ७।।

ॐ ह्रीं वपुषा कारितदेवस्त्रीस्पर्शनेंद्रियविषयाब्रह्मविरति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ८।।

ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितदेवस्त्रीस्पर्शनेंद्रियविषयाब्रह्मविरति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ९।।

इति ब्रह्मव्रतस्य षष्ठः प्रकारः ३६

ॐ ह्रीं मनसा कृतदेवस्त्रीरसनेंद्रियविषयाब्रह्मविरति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। १।।

ॐ ह्रीं मनसा कारितदेवस्त्रीरसनेंद्रियविषयाब्रह्मविरति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। २।।

ॐ ह्रीं मनसानुमोदितदेवस्त्रीरसनेंद्रियविषयाब्रह्मविरति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ३।।

ॐ ह्रीं वचसा कृतदेवस्त्रीरसनेंद्रियविषयाब्रह्मविरति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ४।।

ॐ ह्रीं वचसा कारितदेवस्त्रीरसनेंद्रियविषयाब्रह्मविरति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ५।।

ॐ ह्रीं वचसानुमोदितदेवस्त्रीरसनेंद्रियविषयाब्रह्मविरति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ६।।

ॐ ह्रीं वपुषा कृतदेवस्त्रीरसनेंद्रियविषयाब्रह्मविरति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ७।।

ॐ ह्रीं वपुषा कारितदेवस्त्रीरसनेंद्रियविषयाब्रह्मविरति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ८।।

ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितदेवस्त्रीरसनेंद्रियविषयाब्रह्मविरति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ९।।

इति ब्रह्मव्रतस्य सप्तमः प्रकारः ३७

ॐ ह्रीं मनसा कृतदेवस्त्रीघ्राणेंद्रियविषयाब्रह्मविरति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। १।।

ॐ ह्रीं मनसा कारितदेवस्त्रीघ्राणेंद्रियविषयाब्रह्मविरति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। २।।

ॐ ह्रीं मनसानुमोदितदेवस्त्रीघ्राणेंद्रियविषयाब्रह्मविरति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ३।।

ॐ ह्रीं वचसा कृतदेवस्त्रीघ्राणेंद्रियविषयाब्रह्मविरति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ४।।

ॐ ह्रीं वचसा कारितदेवस्त्रीघ्राणेंद्रियविषयाब्रह्मविरति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ५।।

ॐ ह्रीं वचसानुमोदितदेवस्त्रीघ्राणेंद्रियविषयाब्रह्मविरति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ६।।

ॐ ह्रीं वपुषा कृतदेवस्त्रीघ्राणेंद्रियविषयाब्रह्मविरति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ७।।

ॐ ह्रीं वपुषा कारितदेवस्त्रीघ्राणेंद्रियविषयाब्रह्मविरति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ८।।

ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितदेवस्त्रीघ्राणेंद्रियविषयाब्रह्मविरति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ९।।

इति ब्रह्मव्रतस्याष्टमः प्रकारः ३८

ॐ ह्रीं मनसा कृतदेवस्त्रीचक्षुरिंद्रियविषयाब्रह्मविरति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। १।।

ॐ ह्रीं मनसा कारितदेवस्त्रीचक्षुरिंद्रियविषयाब्रह्मविरति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। २।।

ॐ ह्रीं मनसानु मोदितदेवस्त्रीचक्षुरिंद्रियविषयाब्रह्मविरति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ३।।

ॐ ह्रीं वचसा कृतदेवस्त्रीचक्षुरिंद्रियविषयाब्रह्मविरति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ४।।

ॐ ह्रीं वचसा कारितदेवस्त्रीचक्षुरिंद्रियविषयाब्रह्मविरति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ५।।

ॐ ह्रीं वचसानुमोदितदेवस्त्रीचक्षुरिंद्रियविषयाब्रह्मविरति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ६।।

ॐ ह्रीं वपुषा कृतदेवस्त्रीचक्षुरिंद्रियविषयाब्रह्मविरति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ७।।

ॐ ह्रीं वपुषा कारितदेवस्त्रीचक्षुरिंद्रियविषयाब्रह्मविरति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ८।।

ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितदेवस्त्रीचक्षुरिंद्रियविषयाब्रह्मविरति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ९।।

इति ब्रह्मव्रतस्य नवमः प्रकारः ३९

ॐ ह्रीं मनसा कृतदेवस्त्रीकर्णेंद्रियविषयाब्रह्मविरति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। १।।

ॐ ह्रीं मनसा कारितदेवस्त्रीकर्णेंद्रियविषयाब्रह्मविरति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। २।।

ॐ ह्रीं मनसानुमोदितदेवस्त्रीकर्णेंद्रियविषयाब्रह्मविरति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ३।।

ॐ ह्रीं वचसा कृतदेवस्त्रीकर्णेंद्रियविषयाब्रह्मविरति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ४।।

ॐ ह्रीं वचसा कारितदेवस्त्रीकर्णेंद्रियविषयाब्रह्मविरति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ५।।

ॐ ह्रीं वचसानुमोदितदेवस्त्रीकर्णेंद्रियविषयाब्रह्मविरति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ६।।

ॐ ह्रीं वपुषा कृतदेवस्त्रीकर्णेंद्रियविषयाब्रह्मविरति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ७।।

ॐ ह्रीं वपुषा कारितदेवस्त्रीकर्णेंद्रियविषयाब्रह्मविरति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ८।।

ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितदेवस्त्रीकर्णेंद्रियविषयाब्रह्मविरति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ९।।

इति ब्रह्मव्रतस्य दशमः प्रकारः ४०

ॐ ह्रीं मनसा कृततिर्य्यग्नारीस्पर्शनेंद्रियविषया ब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। १।।
ॐ ह्रीं मनसा कारिततिर्य्यग्नारीस्पर्शनेंद्रियविषया ब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। २।।
ॐ ह्रीं मनसानुमोदिततिर्य्यग्नारीस्पर्शनेंद्रियविषया ब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ३।।
ॐ ह्रीं वचसा कृततिर्य्यग्नारीस्पर्शनेंद्रियविषया ब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ४।।
ॐ ह्रीं वचसा कारिततिर्य्यग्नारीस्पर्शनेंद्रियविषया ब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ५।।
ॐ ह्रीं वचसानुमोदिततिर्य्यग्नारीस्पर्शनेंद्रियविषया ब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ६।।
ॐ ह्रीं वपुषा कृततिर्य्यग्नारीस्पर्शनेंद्रियविषया ब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ७।।
ॐ ह्रीं वपुषा कारिततिर्य्यग्नारीस्पर्शनेंद्रियविषया ब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ८।।
ॐ ह्रीं वपुषानुमोदिततिर्य्यग्नारीस्पर्शनेंद्रियविषया ब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ९।।

इति ब्रह्मव्रतस्यैकादशः प्रकारः ४१

ॐ ह्रीं मनसा कृततिर्य्यग्नारीरसनेंद्रियविषयाब्रह्म विरति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। १।।

ॐ ह्रीं मनसाकारिततिर्य्यग्नारीरसनेंद्रियविषयाब्रह्म विरतिमहाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। २।।

ॐ ह्रींमनसानुमोदिततिर्य्यग्नारीरसनेंद्रियविषयाब्रह्म विरति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ३।।

ॐ ह्रीं वचसा कृततिर्य्यग्नारीरसनेंद्रियविषयाब्रह्म विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ४।।

ॐ ह्रीं वचसा कारिततिर्य्यग्नारीरसनेंद्रियविषयाब्रह्म विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ५।।

ॐ ह्रीं वचसानुमोदिततिर्य्यग्नारीरसनेंद्रियविषयाब्रह्म विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ६।।

ॐ ह्रीं वपुषा कृततिर्य्यग्नारीरसनेंद्रियविषयाब्रह्म विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ७।।

ॐ ह्रीं वपुषा कारिततिर्य्यग्नारीरसनेंद्रियविषयाब्रह्म विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ८।।

ॐ ह्रीं वपुषानुमोदिततिर्य्यग्नारीरसनेंद्रियविषयाब्रह्म विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ९।।

इति ब्रह्मव्रतस्य द्वादशः प्रकारः ४२

ॐ ह्रीं मनसा कृततिर्य्यग्नारीघ्राणेंद्रियविषयाब्रह्मविरति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। १।।

ॐ ह्रीं मनसा कारिततिर्य्यग्नारीघ्राणेंद्रियविषयाब्रह्मविरति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। २।।

ॐ ह्रीं मनसानुमोदिततिर्य्यग्नारीघ्रांणेंद्रियविषयाब्रह्म विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ३।।

ॐ ह्रीं मनसा कृततिर्य्यनारीघ्राणेंद्रियविषयाब्रह्मविरति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ४।।

ॐ ह्रीं वचसा कारिततिर्य्यग्नारीघ्राणेंद्रियविषयाब्रह्मविरति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।

ॐ ह्रीं वचसानु मोदिततिर्य्यग्नारीघ्राणेंद्रियविषयाब्रह्म विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ६।।

ॐ ह्रीं वपुषा कृततिर्य्यग्नारीघ्राणेंद्रियविषयाब्रह्मविरति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ७।।

ॐ ह्रीं वपुषा कारिततिर्य्यग्नारीघ्राणेंद्रियविषयाब्रह्मविरति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ८।।

ॐ ह्रीं वपुषानुमोदिततिर्य्यग्नारीघ्राणेंद्रियविषया ब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ९।।

इति ब्रह्मव्रतस्य ब्रह्मव्रतस्यः प्रकारः ४३

ॐ ह्रीं मनसा कृततिर्य्यग्नारीचक्षुरिंद्रियविषया ब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। १।।
ॐ ह्रीं मनसा कारिततिर्य्यग्नारीचक्षुरिंद्रियविषया ब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। २।।
ॐ ह्रीं मनसानुमोदिततिर्य्यग्नारीचक्षुरिंद्रियविषया ब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ३।।
ॐ ह्रीं मनसा कृततिर्य्यग्नारीचक्षुरिंद्रियविषया ब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ४।।
ॐ ह्रीं वचसा कारिततिर्य्यग्नारीचक्षुरिंद्रियविषया ब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।५।।
ॐ ह्रीं वचसानुमोदिततिर्य्यग्नारीचक्षुरिंद्रियविषया ब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ६।।
ॐ ह्रीं वपुषा कृततिर्य्यग्नारीचक्षुरिंद्रियविषया ब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ७।।
ॐ ह्रीं वपुषा कारिततिर्य्यग्नारीचक्षुरिंद्रियविषया ब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ८।।
ॐ ह्रीं वपुषानुमोदिततिर्य्यग्नारीचक्षुरिंद्रियविषया ब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ९।।

इति ब्रह्मव्रतस्य चतुर्दशः प्रकारः ४४

ॐ ह्रीं मनसा कृततिर्य्यग्नारीकर्णेंद्रियविषयाब्रह्मविरति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। १।।

ॐ ह्रीं मनसा कारिततिर्य्यग्नारीकर्णेंद्रियविषयाब्रह्मविरति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। २।।

ॐ ह्रीं मनसानुमोदिततिर्य्यग्नारीकर्णेंद्रियविषयाब्रह्म विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ३।।

ॐ ह्रीं वचसा कृततिर्य्यग्नारीकर्णेंद्रियविषयाब्रह्मविरति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ४।।

ॐ ह्रीं वचसा कारिततिर्य्यग्नारीकर्णेंद्रियविषयाब्रह्मविरति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ५।।

ॐ ह्रींवचसानुमोदिततिर्य्यग्नारीकर्णेंद्रियविषयाब्रह्म विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ६।।

ॐ ह्रीं वपुषा कृततिर्य्यग्नारीकर्णेंद्रियविषयाब्रह्मविरति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ७।।

ॐ ह्रीं वपुषा कारिततिर्य्यग्नारीकर्णेंद्रियविषयाब्रह्मविरति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ८।।

ॐ ह्रीं वपुषानुमोदिततिर्य्यग्नारीकर्णेंद्रियविषयाब्रह्मविरति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ९।।

इति ब्रह्मव्रतस्य पंचदशः प्रकारः ४५

ॐ ह्रीं मनसा कृतचित्रिणीनारीस्पर्शनेंद्रियविषया ब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। १।।
ॐ ह्रीं मनसा कारितचित्रिणीनारीस्पेर्शनेंद्रियविषया ब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। २।।
ॐ ह्रीं मनसानुमोदितचित्रिणीनारीस्पर्शनेंद्रियविषया ब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ३।।
ॐ ह्रीं वचसा कृतचित्रिणीनारीस्पर्शनेंद्रियविषया ब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ४।।
ॐ ह्रीं वचसा कारितचित्रिणीनारीस्पर्शनेंद्रियविषया ब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ५।।
ॐ ह्रीं वचसानुमोदितचित्रिणीनारीस्पर्शनेंद्रियविषया ब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ६।।
ॐ ह्रीं वपुषा कृतचित्रिणीनारीस्पर्शनेंद्रियविषया ब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ७।।
ॐ ह्रीं वपुषा कारितचित्रिणीनारीस्पर्शनेंद्रियविषया ब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ८।।
ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितचित्रिणीनारीस्पर्शनेंद्रियविषया ब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ९।।

इति ब्रह्मव्रतस्य षोड़शः प्रकारः ४६

ॐ ह्रीं मनसा कृतचित्रिणीनारीरसनेंद्रियविषयाब्रह्म
विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः ।। १।।
ॐ ह्रीं मनसा कारितचित्रिणीनारीरसनेंद्रियविषयाब्रह्म
विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः ।। २।।
ॐ ह्रीं मनसानुमोदितचित्रिणीनारीरसनेंद्रियविषयाब्रह्म
विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः ।। ३।।
ॐ ह्रीं वचसा कृतचित्रिणीनारीरसनेंद्रियविषयाब्रह्म
विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः ।। ४।।
ॐ ह्रीं वचसा कारितचित्रिणीनारीरसनेंद्रियविषयाब्रह्म
विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः ।। ५।।
ॐ ह्रीं वचसानुमोदितचित्रिणीनारीरसनेंद्रियविषयाब्रह्म
विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः ।। ६।।
ॐ ह्रीं वपुषा कृतचित्रिणीनारीरसनेंद्रियविषयाब्रह्म
विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः ।। ७।।
ॐ ह्रीं वपुषा कारितचित्रिणीनारीरसनेंद्रियविषयाब्रह्म
विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः ।। ८।।
ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितचित्रिणीनारीरसनेंद्रियविषयाब्रह्म
विरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः ।। ९।।

इति ब्रह्मचर्यस्य [illegible] [illegible] ४७

ॐ ह्रीं मनसा कृतचित्रिणीनारीघ्राणेंद्रियविषया ब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। १।।

ॐ ह्रीं मनसा कारितचित्रिणीनारीघ्राणेंद्रियविषया ब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। २।।

ॐ ह्रीं मनसानुमोदितचित्रिणीनारीघ्राणेंद्रियविषया ब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ३।।

ॐ ह्रीं वचसा कृतचित्रिणीनारीघ्राणेंद्रियविषया ब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ४।।

ॐ ह्रीं वचसा कारितचित्रिणीनारीघ्राणेंद्रियविषया ब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ५।।

ॐ ह्रीं वचसानुमोदितचित्रिणीनारीघ्राणेंद्रियविषया ब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ६।।

ॐ ह्रीं वपुषा कृतचित्रिणीनारीघ्राणेंद्रियविषया ब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ७।।

ॐ ह्रीं वपुषा कारितचित्रिणीनारीघ्राणेंद्रियविषया ब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ८।।

ॐ ह्रीं वपुसानुमोदितचित्रिणीनारीघ्राणेंद्रियविषया ब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ९।।

इति ब्रह्मविरत्यापेक्षा प्रकारः ४८

ॐ ह्रीं मनसा कृतचित्रिणीनारीकर्णेंद्रियविषया ब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। १।।
ॐ ह्रीं मनसा कारितचित्रिणीनारीकर्णेंद्रियविषया ब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। २।।
ॐ ह्रीं मनसानुमोदितचित्रिणीनारीकर्णेंद्रियविषया ब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ३।।
ॐ ह्रीं वचसा कृतचित्रिणीनारीकर्णेंद्रियविषया ब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ४।।
ॐ ह्रीं वचसा कारितचित्रिणीनारीकर्णेंद्रियविषया ब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ५।।
ॐ ह्रीं वचसानुमोदितचित्रिणीनारीकर्णेंद्रियविषया ब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ६।।
ॐ ह्रीं वपुषा कृतचित्रिणीनारीकर्णेंद्रियविषया ब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ७।।
ॐ ह्रीं वपुषा कारितचित्रिणीनारीकर्णेंद्रियविषया ब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ८।।
ॐ ह्रीं वपुसानुमोदितचित्रिणीनारीकर्णेंद्रियविषया ब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ९।।

इति ब्रह्मव्रतस्यैकोनविंशः प्रकारः ४९

ॐ ह्रीं मनसा कृतचित्रिणीनारीचक्षुरिंद्रियविषया ब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। १।।
ॐ ह्रीं मनसा कारितचित्रिणीनारीचक्षुरिंद्रियविषया ब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। २।।
ॐ ह्रीं मनसानुमोदितचित्रिणीनारीचक्षुरिंद्रियविषया ब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ३।।
ॐ ह्रीं वचसा कृतचित्रिणीनारीचक्षुरिंद्रियविषया ब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ४।।
ॐ ह्रीं वचसा कारितचित्रिणीनारीचक्षुरिंद्रियविषया ब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ५।।
ॐ ह्रीं वचसानुमोदितचित्रिणीनारीचक्षुरिंद्रियविषया ब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ६।।
ॐ ह्रीं वपुषा कृतचित्रिणीनारीचक्षुरिंद्रियविषया ब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ७।।
ॐ ह्रीं वपुषा कारितचित्रिणीनारीचक्षुरिंद्रियविषया ब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ८।।
ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितचित्रिणीनारीचक्षुरिंद्रियविषया ब्रह्मविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ९।।

इति ब्रह्मव्रतस्य विंशतिः प्रकारः ५०

## अथ परिग्रहविरतिमहाव्रतस्य जाप्य मंत्र

ॐ ह्रीं मनसा कृतक्रोधाभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। १।।

ॐ ह्रीं मनसा कारितक्रोधाभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। २।।

ॐ ह्रीं मनसानुमोदितक्रोधाभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। ३।।

ॐ ह्रीं वचसा कृतक्रोधाभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। ४।।

ॐ ह्रीं वचसा कारितक्रोधाभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। ५।।

ॐ ह्रीं वचसानुमोदितक्रोधाभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। ६।।

ॐ ह्रीं वपुषा कृतक्रोधाभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। ७।।

ॐ ह्रीं वपुषा कारितक्रोधाभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। ८।।

ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितक्रोधाभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। ९।।

इति परिग्रहव्रतस्य प्रथमः प्रकारः ५१

ॐ ह्रीं मनसा कृतमानाभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहा व्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। १।।

ॐ ह्रीं मनसा कारितमानाभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहा व्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। २।।

ॐ ह्रीं मनसानुमोदितमानाभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहा व्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ३।।

ॐ ह्रीं वचसा कृतमानाभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहा व्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ४।।

ॐ ह्रीं वचसा कारितमानाभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहा व्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ५।।

ॐ ह्रीं वचसानुमोदितमानाभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहा व्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ६।।

ॐ ह्रीं वपुषा कृतमानाभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहा व्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ७।।

ॐ ह्रीं वपुषा कारितमानाभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहा व्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ८।।

ॐ ह्रीं वपुसानुमोदितमानाभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहा व्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ९।।

इति परिग्रहव्रतस्य द्वितीयः प्रकारः ५२

ॐ ह्रीं मनसा कृतमायाभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहा व्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। १।।

ॐ ह्रीं मनसा कारितमायाभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहा व्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। २।।

ॐ ह्रीं मनसानुमोदितमायाभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहा व्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ३।।

ॐ ह्रीं वचसा कृतमायाभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहा व्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ४।।

ॐ ह्रीं वचसा कारितमायाभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहा व्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ५।।

ॐ ह्रीं वचसानुमोदितमायाभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहा व्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ६।।

ॐ ह्रीं वपुषा कृतमायाभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहा व्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ७।।

ॐ ह्रीं वपुषा कारितमायाभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहा व्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ८।।

ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितमायाभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहा व्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ९।।

इति परिग्रहविरतिव्रतस्य तृतीयः प्रकारः ५३

ॐ ह्रीं मनसा कृतलोभाभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहा व्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। १।।

ॐ ह्रीं मनसा कारितलोभाभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहा व्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। २।।

ॐ ह्रीं मनसानुमोदितलोभाभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहा व्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ३।।

ॐ ह्रीं वचसा कृतलोभाभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहा व्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ४।।

ॐ ह्रीं वचसा कारितलोभाभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहा व्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ५।।

ॐ ह्रीं वचसानुमोदितलोभाभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहा व्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ६।।

ॐ ह्रीं वपुषा कृतलोभाभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहा व्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ७।।

ॐ ह्रीं वपुषा कारितलोभाभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहा व्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ८।।

ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितलोभाभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहा व्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ९।।

इति परिग्रहविरतिव्रतस्य चतुर्थः प्रकारः ५४

ॐ ह्रीं मनसा कृतहास्याभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहा व्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। १।।

ॐ ह्रीं मनसा कारितहास्याभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहा व्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। २।।

ॐ ह्रीं मनसानुमोदितहास्याभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहा व्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ३।।

ॐ ह्रीं वचसा कृतहास्याभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहा व्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ४।।

ॐ ह्रीं वचसा कारितहास्याभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहा व्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ५।।

ॐ ह्रीं वचसानुमोदितहास्याभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहा व्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ६।।

ॐ ह्रीं वपुषा कृतहास्याभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहा व्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ७।।

ॐ ह्रीं वपुषा कारितहास्याभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहा व्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ८।।

ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितहास्याभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहा व्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ९।।

इति परिग्रहविरतिव्रतस्य पंचमः प्रकारः ५५

ॐ ह्रीं मनसा कृतरत्यभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहा व्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। १।।

ॐ ह्रीं मनसा कारितरत्यभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहा व्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। २।।

ॐ ह्रीं मनसानुमोदितरत्यभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहा व्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ३।।

ॐ ह्रीं वचसा कृतरत्यभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहा व्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ४।।

ॐ ह्रीं वचसा कारितरत्यभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहा व्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ५।।

ॐ ह्रीं वचसानुमोदितरत्यभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहा व्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ६।।

ॐ ह्रीं वपुषा कृतरत्यभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहा व्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ७।।

ॐ ह्रीं वपुषा कारितरत्यभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहा व्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ८।।

ॐ ह्रीं वपुसानुमोदितरत्यभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहा व्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ९।।

इति ब्रह्मविरतिव्रतस्य षष्ठः प्रकारः ५६

ॐ ह्रीं मनसा कृताऽरत्यभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। १।।

ॐ ह्रीं मनसा कारिताऽरत्यभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। २।।

ॐ ह्रीं मनसानुमोदिताऽरत्यभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ३।।

ॐ ह्रीं वचसा कृताऽरत्यभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ४।।

ॐ ह्रीं वचसा कारिताऽरत्यभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ५।।

ॐ ह्रीं वचसानुमोदिताऽरत्यभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ६।।

ॐ ह्रीं वपुषा कृताऽरत्यभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ७।।

ॐ ह्रीं वपुषा कारिताऽरत्यभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ८।।

ॐ ह्रीं वपुषानुमोदिताऽरत्यभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ९।।

इति परिग्रहव्रतस्य सप्तमः [illegible] ५७

ॐ ह्रीं मनसा कृतशोकाभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहा व्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। १।।

ॐ ह्रीं मनसा कारितशोकाभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहा व्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। २।।

ॐ ह्रीं मनसानुमोदितशोकाभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहा व्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ३।।

ॐ ह्रीं वचसा कृतशोकाभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहा व्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ४।।

ॐ ह्रीं वचसा कारितशोकाभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहा व्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ५।।

ॐ ह्रीं वचसानुमोदितशोकाभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहा व्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ६।।

ॐ ह्रीं वपुषा कृतशोकाभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहा व्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ७।।

ॐ ह्रीं वपुषा कारितशोकाभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहा व्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ८।।

ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितशोकाभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहा व्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ९।।

इति परिग्रहविरतिमहाव्रतस्याष्टमः प्रकारः ५८

ॐ ह्रीं मनसा कृतभयाभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहा व्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। १।।
ॐ ह्रीं मनसा कारितभयाभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहा व्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। २।।
ॐ ह्रीं मनसानुमोदितभयाभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहा व्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ३।।
ॐ ह्रीं वचसा कृतभयाभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहा व्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ४।।
ॐ ह्रीं वचसा कारितभयाभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहा व्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ५।।
ॐ ह्रीं वचसानुमोदितभयाभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहा व्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ६।।
ॐ ह्रीं वपुषा कृतभयाभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहा व्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ७।।
ॐ ह्रीं वपुषा कारितभयाभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहा व्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ८।।
ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितभयाभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहा व्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ९।।

इति परिग्रहविरतिमहाव्रतस्य नवमः प्रकारः ५९

ॐ ह्रीं मनसा कृतजुगुप्साभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहा व्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। १।।

ॐ ह्रीं मनसा कारितजुगुप्साभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहा व्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। २।।

ॐ ह्रीं मनसानुमोदितजुगुप्साभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहा व्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ३।।

ॐ ह्रीं वचसा कृतजुगुप्साभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहा व्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ४।।

ॐ ह्रीं वचसा कारितजुगुप्साभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहा व्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ५।।

ॐ ह्रीं वचसानुमोदितजुगुप्साभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहा व्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ६।।

ॐ ह्रीं वपुषा कृतजुगुप्साभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहा व्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ७।।

ॐ ह्रीं वपुषा कारितजुगुप्साभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहा व्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ८।।

ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितजुगुप्साभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहा व्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ९।।

इति परिग्रहविरतिमहाव्रतस्य दशमः प्रकारः ६०

ॐ ह्रीं मनसाकृतस्त्रीवेदाभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। १।।

ॐ ह्रीं मनसा कारितस्त्रीवेदाभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहा व्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। २।।

ॐ ह्रीं मनसानुमोदितस्त्रीवेदाभ्यंतरपरिग्रहविरति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ३।।

ॐ ह्रीं वचसा कृतस्त्रीवेदाभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहा व्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। ४।।

ॐ ह्रीं वचसा कारितस्त्रीवेदाभ्यतरपरिग्रहविरतिमहा व्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ५।।

ॐ ह्रीं वचसानुमोदितस्त्रीवेदाभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहा व्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ६।।

ॐ ह्रीं वपुषा कृतस्त्रीवेदाभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। ७।।

ॐ ह्रीं वपुषा कारितस्त्रीवेदाभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहा व्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ८।।

ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितस्त्रीवेदाभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहा व्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ९।।

इति परिग्रहविरतिमहाव्रतस्यैकादशः प्रकारः ६१

ॐ ह्रीं मनसा कृतपुंवेदाभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहा व्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। १।।

ॐ ह्रीं मनसा कारितपुंवेदाभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहा व्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। २।।

ॐ ह्रीं मनसानुमोदितपुंवेदाभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहा व्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ३।।

ॐ ह्रीं वचसा कृतपुंवेदाभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। ४।।

ॐ ह्रीं वचसा कारितपुंवेदाभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहा व्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ५।।

ॐ ह्रीं वचसानुमोदितपुंवेदाभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहा व्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ६।।

ॐ ह्रीं वपुषा कृतपुंवेदाभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहा व्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ७।।

ॐ ह्रीं वपुषा कारितपुंवेदाभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहा व्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ८।।

ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितपुंवेदाभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहा व्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ९।।

इति परिग्रहमहाव्रतस्य द्वादशः प्रकारः ६२

ॐ ह्रीं मनसाकृतनपुंसकवेदाभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहा व्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। १।।

ॐ ह्रीं मनसाकारितनपुंसकवेदाभ्यंतरपरिग्रहविरति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। २।।

ॐ ह्रींमनसानुमोदितनपुंसकवेदाभ्यंतरपरिग्रहविरति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ३।।

ॐ ह्रीं वचसाकृतनपुंसकवेदाभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहा व्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ४।।

ॐ ह्रीं वचसाकारितनपुंसकवेदाभ्यंतरपरिग्रहविरति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ५।।

ॐ ह्रींवचसानुमोदितनपुंसकवेदाभ्यंतरपरिग्रहविरति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ६।।

ॐ ह्रीं वपुषाकृतनपुंसकवेदाभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहा व्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ७।।

ॐ ह्रीं वपुषाकारितनपुंसकवेदाभ्यंतरपरिग्रहविरति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ८।।

ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितनपुंसकवेदाभ्यंतरपरिग्रहविरति महाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। ९।।

इति परिग्रहविरतिमहाव्रतस्य त्रयोदशः प्रकारः ६२

ॐ ह्रीं मनसा कृतमिथ्यात्वाभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहा व्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः ।। १ ।।

ॐ ह्रीं मनसाकारितमिथ्यात्वाभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहा व्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः ।। २ ।।

ॐ ह्रीं मनसानुमोदितमिथ्यात्वाभ्यंतरपरिग्रहविरति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः ।। ३ ।।

ॐ ह्रीं वचसा कृतमिथ्यात्वाभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहा व्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः ।। ४ ।।

ॐ ह्रीं वचसाकारितमिथ्यात्वाभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहा व्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः ।। ५ ।।

ॐ ह्रीं वचसानुमोदितमिथ्यात्वाभ्यंतरपरिग्रहविरति महा व्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः ।। ६ ।।

ॐ ह्रीं वपुषा कृतमिथ्यात्वाभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहा व्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः ।। ७ ।।

ॐ ह्रीं वपुषाकारितमिथ्यात्वाभ्यंतरपरिग्रहविरतिमहा व्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः ।। ८ ।।

ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितमिथ्यात्वाभ्यंतरपरिग्रहविरति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः ।। ९ ।।

इति परिग्रहविरतिमहाव्रतस्य चतुर्दशः पदानि ८४

ॐ ह्रीं मनसा कृतद्विपदबाह्यपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। १।।

ॐ ह्रीं मनसा कारितद्विपदबाह्यपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। २।।

ॐ ह्रीं मनसानुमोदितद्विपदबाह्यपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ३।।

ॐ ह्रीं वचसा कृतद्विपदबाह्यपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ४।।

ॐ ह्रीं वचसा कारितद्विपदबाह्यपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ५।।

ॐ ह्रीं वचसानुमोदितद्विपदबाह्यपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ६।।

ॐ ह्रीं वपुषा कृतद्विपदबाह्यपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ७।।

ॐ ह्रीं वपुषा कारितद्विपदबाह्यपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ८।।

ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितद्विपदबाह्यपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ९।।

इति परिग्रहविरतिमहाव्रतस्य पंचदशः प्रकारः १५

ॐ ह्रीं मनसा कृतचतुष्पदबाह्यपरिग्रहविरतिमहा व्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। १।।

ॐ ह्रीं मनसा कारितचतुष्पदबाह्यपरिग्रहविरतिमहा व्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। २।।

ॐ ह्रीं मनसानुमोदितचतुष्पदबाह्यपरिग्रहविरतिमहा व्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ३।।

ॐ ह्रीं वचसा कृतचतुष्पदबाह्यपरिग्रहविरतिमहा व्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ४।।

ॐ ह्रीं वचसा कारितचतुष्पदबाह्यपरिग्रहविरतिमहा व्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ५।।

ॐ ह्रीं वचसानुमोदितचतुष्पदबाह्यपरिग्रहविरतिमहा व्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ६।।

ॐ ह्रीं वपुषा कृतचतुष्पदबाह्यपरिग्रहविरतिमहा व्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ७।।

ॐ ह्रीं वपुषा कारितचतुष्पदबाह्यपरिग्रहविरतिमहा व्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ८।।

ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितचतुष्पदबाह्यपरिग्रहविरतिमहा व्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ९।।

इतिपरिग्रहविरतिमहाव्रतस्य षोडषः प्रकारः ६६

ॐ ह्रीं मनसा कृतक्षेत्रबाह्यपरिग्रहविरतिमहा व्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। १।।

ॐ ह्रीं मनसा कारितक्षेत्रबाह्यपरिग्रहविरतिमहा व्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। २।।

ॐ ह्रीं मनसानुमोदितक्षेत्रबाह्यपरिग्रहविरतिमहा व्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ३।।

ॐ ह्रीं वचसा कृतक्षेत्रबाह्यपरिग्रहविरतिमहा व्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ४।।

ॐ ह्रीं वचसा कारितक्षेत्रबाह्यपरिग्रहविरतिमहा व्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ५।।

ॐ ह्रीं वचसानुमोदितक्षेत्रबाह्यपरिग्रहविरतिमहा व्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ६।।

ॐ ह्रीं वपुषा कृतक्षेत्रबाह्यपरिग्रहविरतिमहा व्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ७।।

ॐ ह्रीं वपुषा कारितक्षेत्रबाह्यपरिग्रहविरतिमहा व्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ८।।

ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितक्षेत्रबाह्यपरिग्रहविरतिमहा व्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ९।।

इति परिग्रहविरतिमहाव्रतस्य सप्तदशः प्रकारः ६७

ॐ ह्रीं मनसा कृतधनबाह्यपरिग्रहविरतिमहाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। १।।

ॐ ह्रीं मनसा कारितधनबाह्यपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। २।।

ॐ ह्रीं मनसानुमोदितधनबाह्यपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ३।।

ॐ ह्रीं वचसा कृतधनबाह्यपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ४।।

ॐ ह्रीं वचसा कारितधनबाह्यपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ५।।

ॐ ह्रीं वचसानुमोदितधनबाह्यपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ६।।

ॐ ह्रीं वपुषा कृतधनबाह्यपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ७।।

ॐ ह्रीं वपुषा कारितधनबाह्यपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ८।।

ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितधनबाह्यपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ९।।

इति परिग्रहविरतिमहाव्रतस्य अष्टादशः प्रकाराः ६.

ॐ ह्रीं मनसा कृतकुप्यबाह्यपरिग्रहविरतिमहा व्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। १।।

ॐ ह्रीं मनसा कारितकुप्यबाह्यपरिग्रहविरतिमहा व्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। २।।

ॐ ह्रीं मनसानुमोदितकुप्यबाह्यपरिग्रहविरतिमहा व्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ३।।

ॐ ह्रीं वचसा कृतकुप्यबाह्यपरिग्रहविरतिमहा व्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ४।।

ॐ ह्रीं वचसा कारितकुप्यबाह्यपरिग्रहविरतिमहा व्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ५।।

ॐ ह्रीं वचसानुमोदितकुप्यबाह्यपरिग्रहविरतिमहा व्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ६।।

ॐ ह्रीं वपुषा कृतकुप्यबाह्यपरिग्रहविरतिमहा व्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ७।।

ॐ ह्रीं वपुषा कारितकुप्यबाह्यपरिग्रहविरतिमहा व्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ८।।

ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितकुप्यबाह्यपरिग्रहविरतिमहा व्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ९।।

इति परिग्रहविरतिमहाव्रतस्यैकोनविंशः प्रभेदः ६९

ॐ ह्रीं मनसा कृतभांडबाह्यपरिग्रहविरतिमहा व्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। १।।
ॐ ह्रीं मनसा कारितभांडबाह्यपरिग्रहविरतिमहा व्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। २।।
ॐ ह्रीं मनसानुमोदितभांडबाह्यपरिग्रहविरतिमहा व्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ३।।
ॐ ह्रीं वचसा कृतभांडबाह्यपरिग्रहविरतिमहा व्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ४।।
ॐ ह्रीं वचसा कारितभांडबाह्यपरिग्रहविरतिमहा व्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ५।।
ॐ ह्रीं वचसानुमोदितभांडबाह्यपरिग्रहविरतिमहा व्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ६।।
ॐ ह्रीं वपुषानु कृतभांडबाह्यपरिग्रहविरतिमहा व्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ७।।
ॐ ह्रीं वपुषा कारितभांडबाह्यपरिग्रहविरतिमहा व्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ८।।
ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितभांडबाह्यपरिग्रहविरतिमहा व्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ९।।

इति परिग्रहविरतिमहाव्रतस्य विंशति प्रकारः ७०

ॐ ह्रीं मनसा कृतधान्यबाह्यपरिग्रहविरतिमहा व्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। १।।

ॐ ह्रीं मनसा कारितधान्यबाह्यपरिग्रहविरतिमहा व्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। २।।

ॐ ह्रीं मनसानुमोदितधान्यबाह्यपरिग्रहविरतिमहा व्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ३।।

ॐ ह्रीं वचसा कृतधान्यबाह्यपरिग्रहविरतिमहा व्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ४।।

ॐ ह्रीं वचसा कारितधान्यबाह्यपरिग्रहविरतिमहा व्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ५।।

ॐ ह्रीं वचसानुमोदितधान्यबाह्यपरिग्रहविरतिमहा व्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ६।।

ॐ ह्रीं वपुषा कृतधान्यबाह्यपरिग्रहविरतिमहा व्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ७।।

ॐ ह्रीं वपुषा कारितधान्यबाह्यपरिग्रहविरतिमहा व्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ८।।

ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितधान्यबाह्यपरिग्रहविरतिमहा व्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ९।।

इति परिग्रहविरतिमहाव्रतस्यैकविंशः प्रकारः ।२१

ॐ ह्रीं मनसा कृतयानबाह्यपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। १।।

ॐ ह्रीं मनसा कारितयानबाह्यपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। २।।

ॐ ह्रीं मनसानुमोदितयानबाह्यपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ३।।

ॐ ह्रीं वचसा कृतयानबाह्यपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ४।।

ॐ ह्रीं वचसा कारितयानबाह्यपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ५।।

ॐ ह्रीं वचसानुमोदितयानबाह्यपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ६।।

ॐ ह्रीं वपुषा कृतयानबाह्यपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ७।।

ॐ ह्रीं वपुषा कारितयानबाह्यपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ८।।

ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितयानबाह्यपरिग्रहविरतिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ९।।

इति परिग्रहविरतिमहाव्रतस्य द्वात्रिंश प्रकारः ७२

ॐ ह्रीं मनसा कृतशयनबाह्यपरिग्रहविरतिमहा व्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। १।।

ॐ ह्रीं मनसा कारितशयनबाह्यपरिग्रहविरतिमहा व्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।२।।

ॐ ह्रीं मनसानुमोदितशयनबाह्यपरिग्रहविरतिमहा व्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ३।।

ॐ ह्रीं वचसा कृतशयनबाह्यपरिग्रहविरतिमहा व्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ४।।

ॐ ह्रीं वचसा कारितशयनबाह्यपरिग्रहविरतिमहा व्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ५।।

ॐ ह्रीं वचसानुमोदितशयनबाह्यपरिग्रहविरतिमहा व्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ६।।

ॐ ह्रीं वपुषा कृतशयनबाह्यपरिग्रहविरतिमहा व्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ७।।

ॐ ह्रीं वपुषा कारितशयनबाह्यपरिग्रहविरतिमहा व्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ८।।

ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितशयनबाह्यपरिग्रहविरतिमहा व्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ९।।

इति परिग्रहविरतिमहाव्रतस्य त्रयोविंशः प्रकारः ७३

ॐ ह्रीं मनसा कृताशनबाह्यपरिग्रहविरतिमहा व्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। १।।

ॐ ह्रीं मनसा कारिताशनबाह्यपरिग्रहविरतिमहा व्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। २।।

ॐ ह्रीं मनसानुमोदिताशनबाह्यपरिग्रहविरतिमहा व्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ३।।

ॐ ह्रीं वचसा कृताशनबाह्यपरिग्रहविरतिमहा व्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ४।।

ॐ ह्रीं वचसा कारिताशनबाह्यपरिग्रहविरतिमहा व्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ५।।

ॐ ह्रीं वचसानुमोदिताशनबाह्यपरिग्रहविरतिमहा व्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ६।।

ॐ ह्रीं वपुषा कृताशनबाह्यपरिग्रहविरतिमहाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। ७।।

ॐ ह्रीं वपुषा कारिताशनबाह्यपरिग्रहविरतिमहा व्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ८।।

ॐ ह्रीं वपुषानुमोदिताशनबाह्यपरिग्रहविरतिमहा व्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ९।।

इति परिग्रहविरतिमहाव्रतस्य चतुर्विंशः प्रकारः ७४

## अथ रात्रि भोजनविरतिअणुव्रत जाप्यमंत्राः

ॐ ह्रीं मनसा कृतरात्रिभोजनविरत्यणुव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। १।।
ॐ ह्रीं मनसा कारितरात्रिभोजनविरत्यणुव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। २।।
ॐ ह्रीं मनसानुमोदितरात्रिभोजनविरत्यणुव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। ३।।
ॐ ह्रीं वचसा कृतरात्रिभोजनविरत्यणुव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। ४।।
ॐ ह्रीं वचसा कारितरात्रिभोजनविरत्यणुव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। ५।।
ॐ ह्रीं वचसानुमोदितरात्रिभोजनविरत्यणुव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। ६।।
ॐ ह्रीं वपुषा कृतरात्रिभोजनविरत्यणुव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। ७।।
ॐ ह्रीं वपुषा कारितरात्रिभोजनविरत्यणुव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। ८।।
ॐ ह्रीं वपुषानमोदितरात्रिभोजनविरत्यणुव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। ९।।

इति रात्रिभोजनस्य प्रकारः ७५

## अथ मनोगुप्तिमहाव्रत-जाप्य-मंत्र-प्रथमः

ॐ ह्रीं मनसा कृतमनोगुप्तिमहाव्रत
प्रोषधोद्योतनायनमः।। १।।
ॐ ह्रीं मनसाकारितमनोगुप्तिमहाव्रत
प्रोषधोद्योतनाय नमः।। २।।
ॐ ह्रीं मनसानुमोदितमनोगुप्तिमहाव्रत
प्रोषधोद्योतनाय नमः।। ३।।
ॐ ह्रीं वचसा कृतमनोगुप्तिमहाव्रत
प्रोषधोद्योतनाय नमः।। ४।।
ॐ ह्रीं वचसा कारितमनोगुप्तिमहाव्रत
प्रोषधोद्योतनाय नमः।। ५।।
ॐ ह्रीं वचसानुमोदितमनोगुप्तिमहाव्रत
प्रोषधोद्योतनाय नमः।। ६।।
ॐ ह्रीं वपुषा कृतमनोगुप्तिमहाव्रत
प्रोषधोद्योतनाय नमः।। ७।।
ॐ ह्रीं वपुषा कारितमनोगुप्तिमहा
व्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ८।।
ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितमनोगुप्तिमहा
व्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ९।।

इति मनोगुप्तिव्रतस्य प्रथमः प्रकारः ७६

## वचनगुप्ति महाव्रत जाप्यमंत्रः

ॐ ह्रीं मनसा कृतवाग्गुप्तिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। १।।

ॐ ह्रीं मनसा कारितवाग्गुप्तिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। २।।

ॐ ह्रीं मनसानुमोदितवाग्गुप्तिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ३।।

ॐ ह्रीं वचसा कृतवाग्गुप्तिमहाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। ४।।

ॐ ह्रीं वचसा कारितवाग्गुप्तिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ५।।

ॐ ह्रीं वचसानुमोदितवाग्गुप्तिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ६।।

ॐ ह्रीं वपुषा कृतवाग्गुप्तिमहा व्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ७।।

ॐ ह्रीं वपुषा कारितवाग्गुप्तिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ८।।

ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितवाग्गुप्तिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ९।।

इतिवचनगुप्तिव्रतस्य प्रथमः प्रकारः ७७

# कायगुप्ति महाव्रतस्य जाप्य मंत्रः

ॐ ह्रीं मनसा कृतकायगुप्तिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। १।।

ॐ ह्रीं मनसाकारितकायगुप्तिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। २।।

ॐ ह्रीं मनसानुमोदितकायगुप्तिमहाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। ३।।

ॐ ह्रीं वचसा कृतकायगुप्तिमहा व्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ४।।

ॐ ह्रीं वचसाकारितकायगुप्तिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ५।।

ॐ ह्रीं वचसानुमोदितकायगुप्तिमहाव्रतप्रोषधो द्योतनाय नमः।। ६।।

ॐ ह्रीं वपुषा कृतकायगुप्तिमहा व्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ७।।

ॐ ह्रीं वपुषा कारितकायगुप्तिमहाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। ८।।

ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितकायगुप्तिमहा व्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ९।।

इतिकायगुप्तिमहाव्रतस्य प्रथमः प्रकारः ७८

## अथेर्य्यासमितिमहाव्रतस्य जाप्य-मंत्रः

ॐ ह्रीं मनसा कृतेर्य्यासमितिमहाव्रतप्रोषधो द्योतनाय नमः।। १।।
ॐ ह्रीं मनसाकारितेर्य्यासमितिमहाव्रत प्रोषधो द्योतनाय नमः।। २।।
ॐ ह्रीं मनसानुमोदितेर्य्यासमितिमहा व्रतप्रोषधो द्योतनाय नमः।। ३।।
ॐ ह्रीं वचसा कृतेर्य्यासमितिमहा व्रतप्रोषधो द्योतनाय नमः।। ४।।
ॐ ह्रीं वचसा कारितेर्य्यासमितिमहा व्रतप्रोषधो द्योतनाय नमः।। ५।।
ॐ ह्रीं वचसानुमोदितेर्य्यासमितिमहा व्रतप्रोषधो द्योतनाय नमः।। ६।।
ॐ ह्रीं वपुषा कृतेर्य्यासमितिमहा व्रतप्रोषधो द्योतनाय नमः।। ७।।
ॐ ह्रीं वपुषा कारितेर्य्यासमितिमहा व्रतप्रोषधो द्योतनाय नमः।। ८।।
ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितेर्य्यासमितिमहा व्रतप्रोषधो द्योतनाय नमः।। ९।।

इतीर्य्यासमितिव्रतस्य प्रथमः प्रकारः।७९

# अथ भाषासमितिव्रतस्य जाप्य-मंत्राः

ॐ ह्रीं मनसाकृतभाविसत्यभाषासमितिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। १।।

ॐ ह्रीं मनसाकारितभाविसत्यभाषासमितिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। २।।

ॐ ह्रीं मनसानुमोदितभाविसत्यभाषासमितिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ३।।

ॐ ह्रीं वचसा कृतभाविसत्यभाषासमितिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ४।।

ॐ ह्रीं वचसा कारितभाविसत्यभाषासमितिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ५।।

ॐ ह्रीं वचसानुमोदितभाविसत्यभाषासमितिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ६।।

ॐ ह्रीं वपुषाकृतभाविसत्यभाषासमितिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ७।।

ॐ ह्रीं वपुषा कारितभाविसत्यभाषासमितिमहाव्रतप्रोषधो द्योतनाय नमः।। ८।।

ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितभाविसत्यभाषासमितिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ९।।

इति भाषासमितिमहाव्रतस्य प्रथमः प्रकारः

ॐ ह्रीं मनसा कृतोपमासत्यभाषा समितिमहाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। १।।

ॐ ह्रीं मनसा कारितोपमासत्यभाषा समितिमहाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। २।।

ॐ ह्रीं मनसानुमोदितोपमासत्यभाषासमितिमहाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। ३।।

ॐ ह्रीं वचसा कृतोपमासत्यभाषासमितिमहाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। ४।।

ॐ ह्रीं वचसा कारितोपमासत्यभाषासमितिमहाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। ५।।

ॐ ह्रीं वचसानुमोदितोपमासत्यभाषासमितिमहाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। ६।।

ॐ ह्रीं वपुषा कृतोपमासत्यभाषसमितिमहाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। ७।।

ॐ ह्रीं वपुषा कारितोपमासत्यभाषासमितिमहाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। ८।।

ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितोपमासत्यभाषासमितिमहाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। ९।।

इति भाषासमितिमहाव्रतस्य द्वितीयः प्रकारः

ॐ ह्रीं मनसा कृतव्यवहारसत्यभाषासमितिमहाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। १।।

ॐ ह्रीं मनसाकारितव्यवहारसत्यभाषासमितिमहाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। २।।

ॐ ह्रीं मनसानुमोदितव्यवहारसत्यभाषासमितिमहा व्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ३।।

ॐ ह्रीं वचसा कृतव्यवहारसत्यभाषासमितिमहाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। ४।।

ॐ ह्रीं वचसा कारितव्यवहारसत्यभाषसमितिमहाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। ५।।

ॐ ह्रीं वचसानुमोदितव्यवहारसत्यभाषासमितिमहा व्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ६।।

ॐ ह्रीं वपुषा कृतव्यवहारसत्यभाषासमितिमहाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। ७।।

ॐ ह्रीं वपुषा कारितव्यवहारसत्यभाषा समितिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ८।।

ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितव्यवहारसत्यभाषा समिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ९।।

इति भाषासमितिमहाव्रतस्य तृतीयः प्रकारः ८२

ॐ ह्रीं मनसा कृतप्रतीतसत्यभाषासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। १।।
ॐ ह्रीं मनसा कारितप्रतीतसत्यभाषासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। २।।
ॐ ह्रीं मनसानुमोदितप्रतीतसत्यभाषासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ३।।
ॐ ह्रीं वचसा कृतप्रतीतसत्यभाषासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ४।।
ॐ ह्रीं वचसा कारितप्रतीतसत्यभाषासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ५।।
ॐ ह्रीं वचसानुमोदितप्रतीतसत्यभाषासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ६।।
ॐ ह्रीं वपुषा कृतप्रतीतसत्यभाषासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ७।।
ॐ ह्रीं वपुषा कारितप्रतीतसत्यभाषासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ८।।
ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितप्रतीतसत्यभाषासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ९।।

इति भाषासमितिमहाव्रतस्य चतुर्थः प्रकारः ८३

ॐ ह्रीं मनसा कृतसंभावनासत्यभाषासमितिमहाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। १।।

ॐ ह्रीं मनसा कारितसंभावनासत्यभाषासमितिमहाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। २।।

ॐ ह्रीं मनसानुमोदितसंभावनासत्यभाषासमितिमहाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। ३।।

ॐ ह्रीं वचसा कृतसंभावनासत्यभाषासमितिमहाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। ४।।

ॐ ह्रीं वचसा कारितसंभावनासत्यभाषासमितिमहाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। ५।।

ॐ ह्रीं वचसानुमोदितसंभावनासत्यभाषासमितिमहाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। ६।।

ॐ ह्रीं वपुषा कृतसंभावनासत्यभाषासमितिमहाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। ७।।

ॐ ह्रीं वपुषा कारितसभावनासत्यभाषासमितिमहाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। ८।।

ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितसंभावनासत्यभाषासमितिमहाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। ९।।

इति भाषासमितिमहाव्रतस्य पंचमः प्रकारः ८४

ॐ ह्रीं मनसा कृतजनपदसत्यभाषासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। १।।
ॐ ह्रीं मनसा कारितजनपदसत्यभाषासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। २।।
ॐ ह्रीं मनसानुमोदितजनपदसत्यभाषासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ३।।
ॐ ह्रीं वचसा कृतजनपदसत्यभाषासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ४।।
ॐ ह्रीं वचसा कारितजनपदसत्यभाषासमितिमहाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। ५।।
ॐ ह्रीं वचसानुमोदितजनपदसत्यभाषासमितिमहा व्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ६।।
ॐ ह्रीं वपुषा कृतजनपदसत्यभाषासमितिमहाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। ७।।
ॐ ह्रीं वपुषा कारितजनपदसत्यभाषासमितिमहाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। ८।।
ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितजनपदसत्यभाषासमितिमहाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।।९।।

इति भाषासमितिमहाव्रतस्य षष्ठः प्रकारः ८५

ॐ ह्रीं मनसा कृतसंवृतिसत्यभाषासमितिमहाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। १।।

ॐ ह्रीं मनसा कारितसंवृतिसत्यभाषासमितिमहाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। २।।

ॐ ह्रीं मनसानुमोदितसंवृतिसत्यभाषासमितिमहाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। ३।।

ॐ ह्रीं वचसा कृतसंवृतिसत्यभाषासमितिमहाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। ४।।

ॐ ह्रीं वचसा कारितसंवृतिसत्यभाषासमितिमहाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। ५।।

ॐ ह्रीं वचसानुमोदितसंवृतिसत्यभाषासमितिमहाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। ६।।

ॐ ह्रीं वपुषा कृतसंवृतिसत्यभाषासमितिमहाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। ७।।

ॐ ह्रीं वपुषा कारितसंवृतिसत्यभाषासमितिमहाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। ८।।

ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितसंवृतिसत्यभाषासमितिमहाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। ९।।

इति भाषासमितिमहाव्रतस्य सप्तमः प्रकारः ८९

ॐ ह्रीं मनसा कृतनामसत्यभाषासमितिमहाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। १।।

ॐ ह्रीं मनसा कारितनामसत्यभाषासमितिमहाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। २।।

ॐ ह्रीं मनसानुमोदितनामसत्यभाषासमितिमहाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। ३।।

ॐ ह्रीं वचसा कृतनामसत्यभाषासमितिमहाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। ४।।

ॐ ह्रीं वचसा कारितनामसत्यभाषासमितिमहाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। ५।।

ॐ ह्रीं वचसानुमोदितनामसत्यभाषासमितिमहाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। ६।।

ॐ ह्रीं वपुषा कृतनामसत्यभाषासमितिमहाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। ७।।

ॐ ह्रीं वपुषा कारितनामसत्यभाषासमितिमहाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। ८।।

ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितनामसत्यभाषासमितिमहाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। ९।।

इति भाषासमितिव्रतस्याष्टमः प्रकारः ८७

ॐ ह्रीं मनसा कृतस्थापनासत्यभाषासमितिमहाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। १।।

ॐ ह्रीं मनसाकारितस्थापनासत्यभाषासमितिमहाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। २।।

ॐ ह्रीं मनसानुमोदितस्थापनासत्यभाषासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ३।।

ॐ ह्रीं वचसा कृतस्थापनासत्यभाषासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ४।।

ॐ ह्रीं वचसा कारितस्थापनासत्यभाषासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ५।।

ॐ ह्रीं वचसानुमोदितस्थापनासत्यभाषासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ६।।

ॐ ह्रीं वपुषा कृतस्थापनासत्यभाषासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ७।।

ॐ ह्रीं वपुषा कारितस्थापनासत्यभाषासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ८।।

ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितस्थापनासत्यभाषासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ९।।

इति भाषासमितिमहाव्रतस्य नवमः प्रकारः ८८

ॐ ह्रीं मनसा कृतरूपसत्यभाषा समितिमहाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। १।।

ॐ ह्रीं मनसा कारितरूपसत्यभाषा समितिमहाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। २।।

ॐ ह्रीं मनसानुमोदितरूपसत्यभाषासमितिमहाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। ३।।

ॐ ह्रीं वचसा कृतरूपसत्यभाषासमितिमहाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। ४।।

ॐ ह्रीं वचसा कारितरूपसत्यभाषासमितिमहाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। ५।।

ॐ ह्रीं वचसानुमोदितरूपसत्यभाषासमितिमहाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। ६।।

ॐ ह्रीं वपुषा कृतरूपसत्यभाषासमितिमहाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। ७।।

ॐ ह्रीं वपुषा कारितरूपसत्यभाषासमितिमहाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। ८।।

ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितरूपसत्यभाषासमितिमहाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। ९।।

इति भाषासमितिमहाव्रतस्य दशमः प्रकारः ८९

## एषणासमितिमहाव्रतस्य जाप्यमंत्रमिदं

ॐ ह्रीं मनसा कृतधात्रीदोषरहितैषणासमितिमहाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। १।।

ॐ ह्रीं मनसाकारितधात्रीदोषरहितैषणासमिति महाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। २।।

ॐ ह्रीं मनसानुमोदितधात्रीदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ३।।

ॐ ह्रीं वचसा कृतधात्रीदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ४।।

ॐ ह्रीं वचसा कारितधात्रीदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ५।।

ॐ ह्रीं वचसानुमोदितधात्रीदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ६।।

ॐ ह्रीं वपुषा कृतधात्रीदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ७।।

ॐ ह्रीं वपुषा कारितधात्रीदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ८।।

ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितधात्रीदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ९।।

इति धात्रीदोषरहितैषणासमितिव्रतम ६०

ॐ ह्रीं मनसा कृतदूतदोषरहितैषणासमितिमहाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। १।।

ॐ ह्रीं मनसाकारितदूतदोषरहितैषणासमितिमहाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। २।।

ॐ ह्रीं मनसानुमोदितदूतदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ३।।

ॐ ह्रीं वचसा कृतदूतदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ४।।

ॐ ह्रीं वचसा कारितदूतदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ५।।

ॐ ह्रीं वचसानुमोदितदूतदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ६।।

ॐ ह्रीं वपुषा कृतदूतदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ७।।

ॐ ह्रीं वपुषा कारितदूतदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ८।।

ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितदूतदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ९।।

इति दूतदोषरहितैषणासमितिव्रतम् ६१

ॐ ह्रीं मनसा कृतनिमित्तदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। १।।
ॐ ह्रीं मनसा कारितनिमित्तदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। २।।
ॐ ह्रीं मनसानुमोदितनिमित्तदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ३।।
ॐ ह्रीं वचसा कृतनिमित्तदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ४।।
ॐ ह्रीं वचसा कारितनिमित्तदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ५।।
ॐ ह्रीं वचसानुमोदितनिमित्तदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ६।।
ॐ ह्रीं वपुषा कृतनिमित्तदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ७।।
ॐ ह्रीं वपुषा कारितनिमित्तदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ८।।
ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितनिमित्तदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ९।।

इति निमित्तदोषरहितैषणासमितिव्रतम् ६२

ॐ ह्रीं मनसा कृताऽजीवनदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। १।।
ॐ ह्रीं मनसा कारिताऽजीवनदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। २।।
ॐ ह्रीं मनसानुमोदिताऽजीवनदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ३।।
ॐ ह्रीं वचसा कृताऽजीवनदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ४।।
ॐ ह्रीं वचसा कारिताऽजीवनदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ५।।
ॐ ह्रीं वचसानुमोदिताऽजीवनदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ६।।
ॐ ह्रीं वपुषा कृताऽजीवनदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।।७।।
ॐ ह्रीं वपुषा कारिताऽजीवनदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ८।।
ॐ ह्रीं वपुषानुमोदिताऽजीवनदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ९।।

इत्याजीवनदोषरहितैषणासमितिमहाव्रतम् ९३

ॐ ह्रीं मनसा कृतव्यपनिकदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। १।।
ॐ ह्रीं मनसा कारितव्यपनिकदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। २।।
ॐ ह्रीं मनसानुमोदितव्यपनिकदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ३।।
ॐ ह्रीं वचसा कृतव्यपनिकदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ४।।
ॐ ह्रीं वचसा कारितव्यपनिकदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ५।।
ॐ ह्रीं वचसानुमोदितव्यपनिकदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ६।।
ॐ ह्रीं वपुषा कृतव्यपनिकदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ७।।
ॐ ह्रीं वपुषा कारितव्यपनिकदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ८।।
ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितव्यपनिकदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ९।।

इतिव्यपनिकदोषरहितैषणासमितिमहाव्रतम् ६४

ॐ ह्रीं मनसा कृतचिकित्सादोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। १।।
ॐ ह्रीं मनसा कारितचिकित्सादोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। २।।
ॐ ह्रीं मनसानुमोदितचिकित्सादोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ३।।
ॐ ह्रीं वचसा कृतचिकित्सादोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ४।।
ॐ ह्रीं वचसा कारितचिकित्सादोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ५।।
ॐ ह्रीं वचसानुमोदितचिकित्सादोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ६।।
ॐ ह्रीं वपुषा कृतचिकित्सादोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ७।।
ॐ ह्रीं वपुषा कारितचिकित्सादोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ८।।
ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितचिकित्सादोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ९।।

इति चिकित्सादोषरहितैषणासमितिव्रतम् ६५

ॐ ह्रीं मनसा कृतक्रोधदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। १।।
ॐ ह्रीं मनसा कारितक्रोधदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। २।।
ॐ ह्रीं मनसानुमोदितक्रोधदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ३।।
ॐ ह्रीं वचसा कृतक्रोधदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ४।।
ॐ ह्रीं वचसा कारितक्रोधदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ५।।
ॐ ह्रीं वचसानुमोदितक्रोधदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ६।।
ॐ ह्रीं वपुषा कृतक्रोधदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ७।।
ॐ ह्रीं वपुषा कारितक्रोधदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ८।।
ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितक्रोधदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ९।।

इति क्रोधदोषरहितैषणासमितिव्रतम् ६६

ॐ ह्रीं मनसा कृतमानदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। १।।
ॐ ह्रीं मनसा कारितमानदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। २।।
ॐ ह्रीं मनसानुमोदितमानदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ३।।
ॐ ह्रीं वचसा कृतमानदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ४।।
ॐ ह्रीं वचसा कारितमानदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ५।।
ॐ ह्रीं वचसानुमोदितमानदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ६।।
ॐ ह्रीं वपुषा कृतमानदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ७।।
ॐ ह्रीं वपुषा कारितमानदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ८।।
ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितमानदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ९।।

इति मानदोषरहितैषणासमितिव्रत ६७

ॐ ह्रीं मनसा कृतमायादोषरहितैषणासमिति
महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। १।।
ॐ ह्रीं मनसा कारितमायादोषरहितैषणासमिति
महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। २।।
ॐ ह्रीं मनसानुमोदितमायादोषरहितैषणासमिति
महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ३।।
ॐ ह्रीं वचसा कृतमायादोषरहितैषणासमिति
महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ४।।
ॐ ह्रीं वचसा कारितमायादोषरहितैषणासमिति
महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ५।।
ॐ ह्रीं वचसानु मोदितमायादोषरहितैषणासमिति
महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ६।।
ॐ ह्रीं वपुषा कृतमायादोषरहितैषणासमिति
महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ७।।
ॐ ह्रीं वपुषा कारितमायादोषरहितैषणासमिति
महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ८।।
ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितमायादोषरहितैषणासमिति
महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ९।।

इति मायादोषरहितैषणासमितिमहाव्रत ९८

ॐ ह्रीं मनसा कृतलोभदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। १।।
ॐ ह्रीं मनसा कारितलोभदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। २।।
ॐ ह्रीं मनसानुमोदितलोभदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ३।।
ॐ ह्रीं वचसा कृतलोभदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ४।।
ॐ ह्रीं वचसा कारितलोभदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ५।।
ॐ ह्रीं वचसानुमोदितलोभदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ६।।
ॐ ह्रीं वपुषा कृतलोभदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ७।।
ॐ ह्रीं वपुषा कारितलोभदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ८।।
ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितलोभदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ९।।

इति लोभदोषरहितैषणासमितिमहाव्रतम् ६६

ॐ ह्रीं मनसा कृतपूर्वस्तुतिदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। १।।
ॐ ह्रीं मनसा कारितपूर्वस्तुतिदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। २।।
ॐ ह्रीं मनसानुमोदितपूर्वस्तुतिदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ३।।
ॐ ह्रीं वचसा कृतपूर्वस्तुतिदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ४।।
ॐ ह्रीं वचसा कारितपूर्वस्तुतिदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ५।।
ॐ ह्रीं वचसानुमोदितपूर्वस्तुतिदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ६।।
ॐ ह्रीं वपुषा कृतपूर्वस्तुतिदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ७।।
ॐ ह्रीं वपुषा कारितपूर्वस्तुतिदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ८।।
ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितपूर्वस्तुतिदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ९।।

इति पूर्वस्तुतिदोषरहितैषणासमितिव्रतम् १००

ॐ ह्रीं मनसा कृतपश्चात्स्तुतिदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। १।।
ॐ ह्रीं मनसाकारितपश्चात्स्तुतिदोषरहितैषणा समितिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। २।।
ॐ ह्रींमनसानुमोदितपश्चात्स्तुतिदोषरहितैषणा समितिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ३।।
ॐ ह्रीं वचसा कृतपश्चात्स्तुतिदोषरहितैषणा समितिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ४।।
ॐ ह्रीं वचसा कारितपश्चात्स्तुतिदोषरहितैषणा समितिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ५।।
ॐ ह्रीं वचसानुमोदितपश्चात्स्तुतिदोषरहितैषणा समितिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ६।।
ॐ ह्रीं वपुषा कृतपश्चात्स्तुतिदोषरहितैषणा समितिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ७।।
ॐ ह्रीं वपुषा कारितपश्चात्स्तुतिदोषरहितैषणा समितिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ८।।
ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितपश्चात्स्तुतिदोषरहितैषणा समितिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ९।।

इति पश्चात्स्तुतिदोषरहितैषणासमितिव्रतम् १०१

ॐ ह्रीं मनसा कृतविद्यादोषरहितैषणासमिति
महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। १।।
ॐ ह्रीं मनसा कारितविद्यादोषरहितैषणासमिति
महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। २।।
ॐ ह्रीं मनसानुमोदितविद्यादोषरहितैषणासमिति
महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ३।।
ॐ ह्रीं वचसा कृतविद्यादोषरहितैषणासमिति
महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ४।।
ॐ ह्रीं वचसा कारितविद्यादोषरहितैषणासमिति
महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ५।।
ॐ ह्रीं वचसानुमोदितविद्यादोषरहितैषणासमिति
महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ६।।
ॐ ह्रीं वपुषा कृतविद्यादोषरहितैषणासमिति
महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ७।।
ॐ ह्रीं वपुषा कारितविद्यादोषरहितैषणासमिति
महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ८।।
ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितविद्यादोषरहितैषणासमिति
महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ९।।

इति विद्यादोषरहितैषणासमितिमहाव्रतम् ९०२

ॐ ह्रीं मनसा कृतमंत्रदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। १।।
ॐ ह्रीं मनसा कारितमंत्रदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। २।।
ॐ ह्रीं मनसानुमोदितमंत्रदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ३।।
ॐ ह्रीं वचसा कृतमंत्रदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ४।।
ॐ ह्रीं वचसा कारितमंत्रदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ५।।
ॐ ह्रीं वचसानुमोदितमंत्रदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ६।।
ॐ ह्रीं वपुषा कृतमंत्रदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ७।।
ॐ ह्रीं वपुषा कारितमंत्रदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ८।।
ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितमंत्रदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ९।।

इति मंत्रदोषरहितैषणासमितिमहाव्रतं १०३

ॐ ह्रीं मनसा कृतचित्रयोगदोषरहितैषणासमिति
महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। १।।
ॐ ह्रीं मनसा कारितचित्रयोगदोषरहितैषणासमिति
महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। २।।
ॐ ह्रीं मनसानुमोदितचित्रयोगदोषरहितैषणासमिति
महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ३।।
ॐ ह्रीं वचसा कृतचित्रयोगदोषरहितैषणासमिति
महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ४।।
ॐ ह्रीं वचसा कारितचित्रयोगदोषरहितैषणासमिति
महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ५।।
ॐ ह्रीं वचसानुमोदितचित्रयोगदोषरहितैषणासमिति
महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ६।।
ॐ ह्रीं वपुषा कृतचित्रयोगदोषरहितैषणासमिति
महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ७।।
ॐ ह्रीं वपुषा कारितचित्रयोगदोषरहितैषणासमिति
महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ८।।
ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितचित्रयोगदोषरहितैषणासमिति
महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ९।।

इति चित्रयोगदोषरहितैषणासमिति १०४

ॐ ह्रीं मनसा कृतमूलकर्म्मदोषरहितैषणासमिति
महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। १।।
ॐ ह्रीं मनसा कारितमूलकर्म्मदोषरहितैषणासमिति
महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। २।।
ॐ ह्रीं मनसानुमोदितमूलकर्म्मदोषरहितैषणासमिति
महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ३।।
ॐ ह्रीं वचसा कृतमूलकर्म्मदोषरहितैषणासमिति
महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ४।।
ॐ ह्रीं वचसा कारितमूलकर्म्मदोषरहितैषणासमिति
महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ५।।
ॐ ह्रीं वचसानुमोदितमूलकर्म्मदोषरहितैषणासमिति
महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ६।।
ॐ ह्रीं वपुषा कृतमूलकर्म्मदोषरहितैषणासमिति
महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ७।।
ॐ ह्रीं वपुषा कारितमूलकर्म्मदोषरहितैषणासमिति
महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ८।।
ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितमूलकर्म्मदोषरहितैषणासमिति
महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ९।।

इति मूलकर्म्मदोषरहितैषणासमितिमहाव्रतं १०५

ॐ ह्रीं मनसा कृतशंकितदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। १।।

ॐ ह्रीं मनसा कारितशंकितदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। २।।

ॐ ह्रीं मनसानुमोदितशंकितदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ३।।

ॐ ह्रीं वचसा कृतशंकितदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ४।।

ॐ ह्रीं वचसा कारितशंकितदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ५।।

ॐ ह्रीं वचसानुमोदितशंकितदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ६।।

ॐ ह्रीं वपुषा कृतशंकितदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ७।।

ॐ ह्रीं वपुषा कारितशंकितदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ८।।

ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितशंकितदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ९।।

इति शंकितदोषरहितैषणासमितिमहाव्रतं १०६

ॐ ह्रीं मनसा कृतम्रक्षितदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। १।।

ॐ ह्रीं मनसा कारितम्रक्षितदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। २।।

ॐ ह्रीं मनसानुमोदितम्रक्षितदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ३।।

ॐ ह्रीं वचसा कृतम्रक्षितदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ४।।

ॐ ह्रीं वचसा कारितम्रक्षितदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ५।।

ॐ ह्रीं वचसानुमोदितम्रक्षितदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ६।।

ॐ ह्रीं वपुषा कृतम्रक्षितदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ७।।

ॐ ह्रीं वपुषा कारितम्रक्षितदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ८।।

ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितम्रक्षितदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ९।।

इति म्रक्षितदोषरहितैषणासमितिमहाव्रतम् १०७

ॐ ह्रीं मनसा कृतनिक्षिप्तदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। १।।
ॐ ह्रीं मनसा कारितनिक्षिप्तदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। २।।
ॐ ह्रीं मनसानुमोदितनिक्षिप्तदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ३।।
ॐ ह्रीं वचसा कृतनिक्षिप्तदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ४।।
ॐ ह्रीं वचसा कारितनिक्षिप्तदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ५।।
ॐ ह्रीं वचसानुमोदितनिक्षिप्तदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ६।।
ॐ ह्रीं वपुषा कृतनिक्षिप्तदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ७।।
ॐ ह्रीं वपुषा कारितनिक्षिप्तदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ८।।
ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितनिक्षिप्तदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ९।।

इति निक्षिप्तदोषरहितैषणासमितिमहाव्रतम् १०८

ॐ ह्रीं मनसा कृतपिहितदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। १।।
ॐ ह्रीं मनसा कारितपिहितदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। २।।
ॐ ह्रीं मनसानुमोदितपिहितदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ३।।
ॐ ह्रीं वचसा कृतपिहितदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ४।।
ॐ ह्रीं वचसा कारितपिहितदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ५।।
ॐ ह्रीं वचसानुमोदितपिहितदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ६।।
ॐ ह्रीं वपुषा कृतपिहितदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ७।।
ॐ ह्रीं वपुषा कारितपिहितदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ८।।
ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितपिहितदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ९।।

इति पिहितदोषरहितैषणासमितिमहाव्रतम् १०९

ॐ ह्रीं मनसा कृतव्यवहरणदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। १।।

ॐ ह्रीं मनसा कारितव्यवहरणदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। २।।

ॐ ह्रीं मनसानुमोदितव्यवहरणदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ३।।

ॐ ह्रीं वचसा कृतव्यवहरणदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ४।।

ॐ ह्रीं वचसा कारितव्यवहरणदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ५।।

ॐ ह्रीं वचसानुमोदितव्यवहरणदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ६।।

ॐ ह्रीं वपुषा कृतव्यवहरणदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ७।।

ॐ ह्रीं वपुषा कारितव्यवहरणदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ८।।

ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितव्यवहरणदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ९।।

इति व्यवहारणदोषहितैषणासमितिव्रतम् ११०

ॐ ह्रीं मनसा कृतदायकदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। १।।

ॐ ह्रीं मनसा कारितदायकदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। २।।

ॐ ह्रीं मनसानु मोदितदायकदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ३।।

ॐ ह्रीं वचसा कृतदायकदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ४।।

ॐ ह्रीं वचसा कारितदायकदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ५।।

ॐ ह्रीं वचसानु मोदितदायकदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ६।।

ॐ ह्रीं वपुषा कृतदायकदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ७।।

ॐ ह्रीं वपुषा कारितदायकदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ८।।

ॐ ह्रीं वपुषानु मोदितदायकदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ९।।

इति दायकदोषरहितैषणासमितिमहाव्रत १११

ॐ ह्रीं मनसा कृतोन्मिश्रदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। १।।
ॐ ह्रीं मनसा कारितोन्मिश्रदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। २।।
ॐ ह्रीं मनसानुमोदितोन्मिश्रदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ३।।
ॐ ह्रीं वचसा कृतोन्मिश्रदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ४।।
ॐ ह्रीं वचसा कारितोन्मिश्रदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ५।।
ॐ ह्रीं वचसानुमोदितोन्मिश्रदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ६।।
ॐ ह्रीं वपुषा कृतोन्मिश्रदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ७।।
ॐ ह्रीं वपुषा कारितोन्मिश्रदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ८।।
ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितोन्मिश्रदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ९।।

इत्युन्मिश्रदोषरहितैषणासमितिमहाव्रतम् ११२

ॐ ह्रीं मनसा कृतापरिणतदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। १।।

ॐ ह्रीं मनसा कारितापरिणतदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। २।।

ॐ ह्रीं मनसानुमोदितापरिणतदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ३।।

ॐ ह्रीं वचसा कृतापरिणतदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ४।।

ॐ ह्रीं वचसा कारितापरिणतदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ५।।

ॐ ह्रीं वचसानुमोदितापरिणतदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ६।।

ॐ ह्रीं वपुषा कृतापरिणतदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ७।।

ॐ ह्रीं वपुषा कारितापरिणतदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ८।।

ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितापरिणतदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ९।।

इत्युपरिणतदोषरहितैषणासमितिव्रतम् ११३

ॐ ह्रीं मनसा कृतलिप्तदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। १।।
ॐ ह्रीं मनसा कारितलिप्तदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। २।।
ॐ ह्रीं मनसानुमोदितलिप्तदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ३।।
ॐ ह्रीं वचसा कृतलिप्तदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ४।।
ॐ ह्रीं वचसा कारितलिप्तदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ५।।
ॐ ह्रीं वचसानुमोदितलिप्तदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ६।।
ॐ ह्रीं वपुषा कृतलिप्तदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ७।।
ॐ ह्रीं वपुषा कारितलिप्तदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ८।।
ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितलिप्तदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ९।।

इति लिप्तदोषरहितैषणासमितिव्रतम् ५१४

ॐ ह्रीं मनसा कृतछोटितदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। १।।

ॐ ह्रीं मनसा कारितछोटितदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनायः नमः।। २।।

ॐ ह्रीं मनसानुमोदितछोटितदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनायः नमः।। ३।।

ॐ ह्रीं वचसा कृतछोटितदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनायः नमः।। ४।।

ॐ ह्रीं वचसा कारितछोटितदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनायः नमः।। ५।।

ॐ ह्रीं वचसानुमोदितछोटितदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनायः नमः।। ६।।

ॐ ह्रीं वपुषा कृतछोटितदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनायः नमः।। ७।।

ॐ ह्रीं वपुषा कारितछोटितदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनायः नमः।। ८।।

ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितछोटितदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनायः नमः।। ९।।

इति छोटितदोषरहितैषणासमिति महाव्रतम् ११५

ॐ ह्रीं मनसा कृतौद्देशिकदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। १।।

ॐ ह्रीं मनसा कारितौद्देशिकदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनायः नमः।। २।।

ॐ ह्रीं मनसानुमोदितौद्देशिकदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनायः नमः।। ३।।

ॐ ह्रीं वचसा कृतौद्देशिकदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनायः नमः।। ४।।

ॐ ह्रीं वचसा कारितौद्देशिकदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनायः नमः।। ५।।

ॐ ह्रीं वचसानुमोदितौद्देशिकदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनायः नमः।। ६।।

ॐ ह्रीं वपुषा कृतौद्देशिकदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनायः नमः।। ७।।

ॐ ह्रीं वपुषा कारितौद्देशिकदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनायः नमः।। ८।।

ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितौद्देशिकदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनायः नमः।। ९।।

इत्यौद्देशिकदोषरहितैषणासमिति महाव्रतम् ११६

ॐ ह्रीं मनसा कृतसाधिकदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। १।।
ॐ ह्रीं मनसा कारितसाधिकदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। २।।
ॐ ह्रीं मनसानुमोदितसाधिकदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ३।।
ॐ ह्रीं वचसा कृतसाधिकदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ४।।
ॐ ह्रीं वचसा कारितसाधिकदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ५।।
ॐ ह्रीं वचसानुमोदितसाधिकदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ६।।
ॐ ह्रीं वपुषा कृतसाधिकदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ७।।
ॐ ह्रीं वपुषा कारितसाधिकदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ८।।
ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितसाधिकदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ९।।

इति साधिकदोषरहितैषणासमितिव्रतम् ११७

ॐ ह्रीं मनसा कृतपूतिदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। १।।

ॐ ह्रीं मनसा कारितपूतिदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। २।।

ॐ ह्रीं मनसानुमोदितपूतिदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ३।।

ॐ ह्रीं वचसा कृतपूतिदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ४।।

ॐ ह्रीं वचसा कारितपूतिदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ५।।

ॐ ह्रीं वचसानुमोदितपूतिदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ६।।

ॐ ह्रीं वपुषा कृतपूतिदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ७।।

ॐ ह्रीं वपुषा कारितपूतिदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ८।।

ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितपूतिदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ९।।

इति पूतिदोषरहितैषणासमितिव्रतम् ११८

ॐ ह्रीं मनसाकृतप्राभृतिकदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। १।।

ॐ ह्रीं मनसा कारितप्राभृतिकदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनायः नमः।। २।।

ॐ ह्रीं मनसानुमोदितप्राभृतिकदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनायः नमः।। ३।।

ॐ ह्रीं वचसा कृतप्राभृतिकदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनायः नमः।। ४।।

ॐ ह्रीं वचसा कारितप्राभृतिकदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनायः नमः।। ५।।

ॐ ह्रीं वचसानुमोदितप्राभृतिकदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनायः नमः।। ६।।

ॐ ह्रीं वपुषा कृतप्राभृतिकदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनायः नमः।। ७।।

ॐ ह्रीं वपुषा कारितप्राभृतिकदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनायः नमः।। ८।।

ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितप्राभृतिकदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनायः नमः।। ९।।

इति प्राभृतिकदोषरहितैषणासमितिव्रतम् ११६

ॐ ह्रीं मनसा कृतप्राभृतिकदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। १।।

ॐ ह्रीं मनसा कारितमिश्रदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनायः नमः।। २।।

ॐ ह्रीं मनसानुमोदितमिश्रदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनायः नमः।। ३।।

ॐ ह्रीं वचसा कृतमिश्रदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनायः नमः।। ४।।

ॐ ह्रीं वचसा कारितमिश्रदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनायः नमः।। ५।।

ॐ ह्रीं वचसानुमोदितमिश्रदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनायः नमः।। ६।।

ॐ ह्रीं वपुषा कृतमिश्रदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनायः नमः।। ७।।

ॐ ह्रीं वपुषा कारितमिश्रदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनायः नमः।। ८।।

ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितमिश्रदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनायः नमः।। ९।।

इति मिश्रदोषरहितैषणासमितिव्रतम् १२०

ॐ ह्रीं मनसा कृतबलिदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। १।।
ॐ ह्रीं मनसा कारितबलिदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। २।।
ॐ ह्रीं मनसानुमोदितबलिदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ३।।
ॐ ह्रीं वचसा कृतबलिदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ४।।
ॐ ह्रीं वचसा कारितबलिदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ५।।
ॐ ह्रीं वचसानुमोदितबलिदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ६।।
ॐ ह्रीं वपुषा कृतबलिदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ७।।
ॐ ह्रीं वपुषा कारितबलिदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ८।।
ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितबलिदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ९।।

इति बलिदोषरहितैषणासमितिमहाव्रतम् १२१

ॐ ह्रीं मनसा कृतन्यस्तदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। १।।

ॐ ह्रीं मनसा कारितन्यस्तदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। २।।

ॐ ह्रीं मनसानुमोदितन्यस्तदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ३।।

ॐ ह्रीं वचसा कृतन्यस्तदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ४।।

ॐ ह्रीं वचसा कारितन्यस्तदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ५।।

ॐ ह्रीं वचसानुमोदितन्यस्तदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ६।।

ॐ ह्रीं वपुषा कृतन्यस्तदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ७।।

ॐ ह्रीं वपुषा कारितन्यस्तदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ८।।

ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितन्यस्तदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ९।।

इति न्यस्तदोषरहितैषणासमिति व्रतम् १२२

ॐ ह्रीं मनसा कृतप्रादुष्कृतदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। १।।

ॐ ह्रीं मनसा कारितप्रादुष्कृतदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। २।।

ॐ ह्रीं मनसानुमोदितप्रादुष्कृतदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ३।।

ॐ ह्रीं वचसा कृतप्रादुष्कृतदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ४।।

ॐ ह्रीं वचसा कारितप्रादुष्कृतदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ५।।

ॐ ह्रीं वचसानुमोदितप्रादुष्कृतदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ६।।

ॐ ह्रीं वपुषा कृतप्रादुष्कृतदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ७।।

ॐ ह्रीं वपुषा कारितप्रादुष्कृतदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ८।।

ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितप्रादुष्कृतदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ९।।

इति प्रादुष्कृतदोषरहितैषणासमितिमहाव्रतम् १२३

ॐ ह्रीं मनसा कृतक्रीतदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। १।।

ॐ ह्रीं मनसा कारितक्रीतदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। २।।

ॐ ह्रीं मनसानुमोदितक्रीतदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ३।।

ॐ ह्रीं वचसा कृतक्रीतदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ४।।

ॐ ह्रीं वचसा कारितक्रीतदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ५।।

ॐ ह्रीं वचसानुमोदितक्रीतदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ६।।

ॐ ह्रीं वपुषा कृतक्रीतदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ७।।

ॐ ह्रीं वपुषा कारितक्रीतदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ८।।

ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितक्रीतदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ९।।

इति क्रीतदोषरहितैषणासमितिमहाव्रतम् १२४

ॐ ह्रीं मनसा कृतप्रामित्यदोषरहितैषणासमितिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। १।।
ॐ ह्रीं मनसा कारितप्रामित्यदोषरहितैषणासमितिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। २।।
ॐ ह्रीं मनसानुमोदितप्रामित्यदोषरहितैषणासमितिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ३।।
ॐ ह्रीं वचसा कृतप्रामित्यदोषरहितैषणासमितिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ४।।
ॐ ह्रीं वचसा कारितप्रामित्यदोषरहितैषणासमितिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ५।।
ॐ ह्रीं वचसानुमोदितप्रामित्यदोषरहितैषणासमितिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ६।।
ॐ ह्रीं वपुषा कृतप्रामित्यदोषरहितैषणासमितिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ७।।
ॐ ह्रीं वपुषा कारितप्रामित्यदोषरहितैषणासमितिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ८।।
ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितप्रामित्यदोषरहितैषणासमितिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ९।।

इति प्रामित्यदोषरहितैषणासमितिमहाव्रतम् १२५

ॐ ह्रीं मनसा कृतपरिवर्त्तितदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। १।।

ॐ ह्रीं मनसा कारितपरिवर्त्तितदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। २।।

ॐ ह्रीं मनसानुमोदितपरिवर्त्तितदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ३।।

ॐ ह्रीं वचसा कृतपरिवर्त्तितदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ४।।

ॐ ह्रीं वचसा कारितपरिवर्त्तितदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ५।।

ॐ ह्रीं वचसानुमोदितपरिवर्त्तितदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ६।।

ॐ ह्रीं वपुषा कृतपरिवर्त्तितदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ७।।

ॐ ह्रीं वपुषा कारितपरिवर्त्तितदोषरहितैषणसमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ८।।

ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितपरिवर्त्तितदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ९।।

इति परिवर्त्तितदोषरहितैषणासमितिव्रतम् १२६

ॐ ह्रीं मनसा कृतनिषिद्धदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। १।।

ॐ ह्रीं मनसा कारितनिषिद्धदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। २।।

ॐ ह्रीं मनसानुमोदितनिषिद्धदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ३।।

ॐ ह्रीं वचसा कृतनिषिद्धदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ४।।

ॐ ह्रीं वचसा कारितनिषिद्धदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ५।।

ॐ ह्रीं वचसानुमोदितनिषिद्धदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ६।।

ॐ ह्रीं वपुषा कृतनिषिद्धदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ७।।

ॐ ह्रीं वपुषा कारितनिषिद्धदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ८।।

ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितनिषिद्धदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ९।।

इति निषिद्धदोषरहितैषणासमितिमहाव्रत १२७

ॐ ह्रीं मनसा कृतअभिहृतदोषरहितैषणासमिति
महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। १।।
ॐ ह्रीं मनसा कारितअभिहृतदोषरहितैषणासमिति
महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। २।।
ॐ ह्रीं मनसानुमोदितअभिहृतदोषरहितैषणासमिति
महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ३।।
ॐ ह्रीं वचसा कृतअभिहृतदोषरहितैषणासमिति
महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ४।।
ॐ ह्रीं वचसा कारितअभिहृतदोषरहितैषणासमिति
महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ५।।
ॐ ह्रीं वचसानुमोदितअभिहृतदोषरहितैषणासमिति
महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ६।।
ॐ ह्रीं वपुषा कृतअभिहृतदोषरहितैषणासमिति
महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ७।।
ॐ ह्रीं वपुषा कारितअभिहृतदोषरहितैषणासमिति
महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ८।।
ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितअभिहृतदोषरहितैषणासमिति
महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ९।।

इति अभिहृतदोषरहितैषणासमितिमहाव्रतम १२८

ॐ ह्रीं मनसा कृतउदिभ्नदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। १।।
ॐ ह्रीं मनसा कारितउदिभ्नदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। २।।
ॐ ह्रीं मनसानुमोदितउदिभ्नदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ३।।
ॐ ह्रीं वचसा कृतउदिभ्नदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ४।।
ॐ ह्रीं वचसा कारितउदिभ्नदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ५।।
ॐ ह्रीं वचसानुमोदितउदिभ्नदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ६।।
ॐ ह्रीं वपुषा कृतउदिभ्नदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ७।।
ॐ ह्रीं वपुषा कारितउदिभ्नदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ८।।
ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितउदिभ्नदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ९।।

इति उद्भिन्नदोषरहितैषणासमितिव्रतम् १२६

ॐ ह्रीं मनसा कृतउच्छेद्यदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। १।।

ॐ ह्रीं मनसा कारितउच्छेद्यदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। २।।

ॐ ह्रीं मनसानुमोदितउच्छेद्यदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ३।।

ॐ ह्रीं वचसा कृतउच्छेद्यदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ४।।

ॐ ह्रीं वचसा कारितउच्छेद्यदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ५।।

ॐ ह्रीं वचसानुमोदितउच्छेद्यदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ६।।

ॐ ह्रीं वपुषा कृतउच्छेद्यदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ७।।

ॐ ह्रीं वपुषा कारितउच्छेद्यदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ८।।

ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितउच्छेद्यदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ९।।

इति उच्छेद्यदोषरहितैषणासमितिमहाव्रतम १३०

ॐ ह्रीं मनसा कृतमालादोषरहितैषणासमितिमहाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। १।।

ॐ ह्रीं मनसा कारितमालादोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। २।।

ॐ ह्रीं मनसानुमोदितमालादोषरहितैषणासमितिमहा व्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ३।।

ॐ ह्रीं वचसा कृतमालादोषरहितैषणासमितिमहा व्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ४।।

ॐ ह्रीं वचसा कारितमालादोषरहितैषणासमितिमहा व्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ५।।

ॐ ह्रीं वचसानुमोदितमालादोषरहितैषणासमितिमहा व्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ६।।

ॐ ह्रीं वपुषा कृतमालादोषरहितैषणासमितिमहा व्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ७।।

ॐ ह्रीं वपुषा कारितमालादोषरहितैषणासमितिमहा व्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ८।।

ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितमालादोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ९।।

इति मालादोषरहितैषणासमितिमहाव्रतम् १३१

ॐ ह्रीं मनसा कृतअंगारदोषरहितैषणासमितिमहा व्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। १।।
ॐ ह्रीं मनसा कारितअंगारदोषरहितैषणासमितिमहा व्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। २।।
ॐ ह्रीं मनसानुमोदितअंगारदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ३।।
ॐ ह्रीं वचसा कृतअंगारदोषरहितैषणासमितिमहा व्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ४।।
ॐ ह्रीं वचसा कारितअंगारदोषरहितैषणासमितिमहा व्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ५।।
ॐ ह्रीं वचसानुमोदितअंगारदोषरहितैषणासमितिमहा व्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ६।।
ॐ ह्रीं वपुषा कृतअंगारदोषरहितैषणासमितिमहा व्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ७।।
ॐ ह्रीं वपुषा कारितअंगारदोषरहितैषणासमितिमहा व्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ८।।
ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितअंगारदोषरहितैषणासमितिमहा व्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ९।।

इति अंगारदोषरहितैषणासमितिमहाव्रतम् १३२

ॐ ह्रीं मनसा कृतधूम्रदोषरहितैषणासमितिमहा व्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। १।।

ॐ ह्रीं मनसा कारितधूम्रदोषरहितैषणासमितिमहा व्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। २।।

ॐ ह्रीं मनसानुमोदितधूम्रदोषरहितैषणासमितिमहा व्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ३।।

ॐ ह्रीं वचसा कृतधूम्रदोषरहितैषणासमितिमहा व्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ४।।

ॐ ह्रीं वचसा कारितधूम्रदोषरहितैषणासमितिमहा व्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ५।।

ॐ ह्रीं वचसानुमोदितधूम्रदोषरहितैषणासमितिमहा व्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ६।।

ॐ ह्रीं वपुषा कृतधूम्रदोषरहितैषणासमितिमहा व्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ७।।

ॐ ह्रीं वपुषा कारितधूम्रदोषरहितैषणासमितिमहा व्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ८।।

ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितधूम्रदोषरहितैषणासमितिमहा व्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ९।।

इति धूम्रदोषरहितैषणासमितिव्रतम १३३

ॐ ह्रीं मनसा कृतसंयोजनदोषरहितैषणासमितिमहा व्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। १।।

ॐ ह्रीं मनसाकारितसंयोजनदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। २।।

ॐ ह्रीं मनसानुमोदितसंयोजनदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ३।।

ॐ ह्रीं वचसा कृतसंयोजनदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ४।।

ॐ ह्रीं वचसा कारितसंयोजनदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ५।।

ॐ ह्रींवचसानुमोदिततसंयोजनदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ६।।

ॐ ह्रीं वपुषाकृतसंयोजनदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ७।।

ॐ ह्रीं वपुषा कारितसंयोजनदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ८।।

ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितसंयोजनदोषरहितैषणासमिति महाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ९।।

इति संयोजनदोषरहितैषणासमितिमहाव्रतम् १३४

ॐ ह्रीं मनसाकृतप्रमाणातिक्रमणदोषरहितैषणा समितिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। १।।
ॐ ह्रीं मनसा कारितप्रमाणातिक्रमणदोषरहितैषणा समितिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। २।।
ॐ ह्रीं मनसानुमोदितप्रमाणातिक्रमणदोषरहितैषणा समितिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ३।।
ॐ ह्रीं वचसा कृतप्रमाणातिक्रमणदोषरहितैषणा समितिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ४।।
ॐ ह्रीं वचसा कारितप्रमाणातिक्रमणदोषरहितैषणा समितिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ५।।
ॐ ह्रीं वचसानुमोदितप्रमाणातिक्रमणदोषरहितैषणा समितिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ६।।
ॐ ह्रीं वपुषा कृतप्रमाणातिक्रमणदोषरहितैषणा समितिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ७।।
ॐ ह्रीं वपुषा कारितप्रमाणातिक्रमणदोषरहितैषणा समितिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ८।।
ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितप्रमाणातिक्रमणदोषरहितैषणा समितिमहाव्रतप्रोषधोद्योतनाय नमः।। ९।।

इति प्रमाणातिक्रमदोषरहितैषणासमितिव्रतम् १३५

## अथादाननिक्षेपणसमितिमहाव्रतस्य जाप्यमन्त्राः

ॐ ह्रीं मनसा कृतादाननिक्षेपणसमितिमहाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। १।।

ॐ ह्रीं मनसा कारितादाननिक्षेपणसमितिमहाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। २।।

ॐ ह्रीं मनसानुमोदितादाननिक्षेपणसमितिमहाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। ३।।

ॐ ह्रीं वचसा कृतादाननिक्षेपणसमितिमहाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। ४।।

ॐ ह्रीं वचसा कारितादाननिक्षेपणसमितिमहाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। ५।।

ॐ ह्रीं वचसानुमोदितादाननिक्षेपणसमितिमहाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। ६।।

ॐ ह्रीं वपुषा कृतादाननिक्षेपणसमितिमहाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। ७।।

ॐ ह्रीं वपुषा कारितादाननिक्षेपणसमितिमहाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। ८।।

ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितादाननिक्षेपणसमितिमहाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। ९।।

इति आदाननिक्षेपण प्रथमः प्रकारः ०२९

# अथ प्रतिष्ठापनसमितिमहाव्रतस्य जाप्यमंत्रा

ॐ ह्रीं मनसाकृतप्रतिष्ठापनासमितिमहाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। १।।

ॐ ह्रीं मनसाकारितप्रतिष्ठापनासमितिमहाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। २।।

ॐ ह्रीं मनसानुमोदितप्रतिष्ठापनासमितिमहाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। ३।।

ॐ ह्रीं वचसाकृतप्रतिष्ठापनासमितिमहाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। ४।।

ॐ ह्रीं वचसाकारितप्रतिष्ठापनसमितिमहाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। ५।।

ॐ ह्रीं वचसानुमोदितप्रतिष्ठापनासमितिमहाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। ६।।

ॐ ह्रीं वपुषा कृतप्रतिष्ठापनासमितिमहाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। ७।।

ॐ ह्रीं वपुषा कारितप्रतिष्ठापनासमितिमहाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। ८।।

ॐ ह्रीं वपुषानुमोदितप्रतिष्ठापनासमितिमहाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नमः।। ९।।

इति प्रतिष्ठापनसमिति महाव्रतस्य प्रकार: ९३७

– समाप्त –